राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

समाचार गेट

वर्ष :1, अंक : 85, पेज 8, मूल्य 1 रुपए सोमवार 10 जून 2024 TIYTLE CXOXDYE: HARYHIYNX11569

पवित्र यात्रा से पहले भावुक दिखीं सानिया मिर्जा

नई दिल्ली। पूर्व टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा हज यात्रा पर रवाना हो गई हैं। सानिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी और कहा कि उन्हें काफी इंतजार के बाद इस पवित्र यात्रा पर जाने का अवसर मिला है। सानिया मिर्जा हज की अपनी पवित्र यात्रा शुरू कर चुकी हैं। पूर्व टेनिस खिलाड़ी ने अपने सोशल मीडिया पर घोषणा की कि उन्हें 'पवित्र यात्रा पर निकलने का अविश्वसनीय अवसर मिला है', क्योंकि वह जल्द ही सऊदी अरब के पवित्र शहर मक्का में होंगी। अपने एक्स अकाउंट पर शेयर किए गए एक लंबे नोट में सानिया ने लिखा, 'मेरे प्यारे दोस्तों, मैं एक नए अनुभव की तैयारी कर रही हूं। मैं आप सभी से अपनी सभी गलतियों की माफी मांगती हूं। मेरा दिल इस समय काफी भावुक और कृतज्ञता से भरा हुआ है। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह मेरी प्रार्थनाओं को स्वीकार और मेरा मार्गदर्शन करेंगे। मैं बहुत भाग्यशाली हूं। कृपया मुझे अपने विचारों और प्रार्थनाओं में रखें। मैं जीवन की एक बेहद खास यात्रा पर निकल रही हूं। मुझे उम्मीद है कि मैं एक बेहतर इंसान के रूप में एक अच्छा दिल और मजबूत ईमान के साथ वापस आऊंगी।इससे पहले सानिया मिर्जा उमरा कर चुकी हैं। पिछले साल टेनिस से संन्यास लेने के ठीक बाद सानिया ने अपने करीबी लोगों के साथ उमरा किया था। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर कई तस्वीरें शेयर कीं, जिसमें उनके माता-पिता बहन और उनके बेटे नजर आए। उन्होंने कैप्शन लिखा था, 'अल्हम्दुलिल्लाह। अल्लाह हमारी दुआएं स्वीकार करे।' हज और उमरा में क्या अंतर है? जो लोग नहीं जानते, उनके लिए हज हर मुसलमान के लिए फर्ज (अनिवार्य) है, जबकि उमरा एक सुन्नत है। सरल शब्दों में, हज जिसे इस्लाम का पांचवां स्तंभ भी कहा जाता है, एक लंबी और धार्मिक यात्रा है जो साल के एक निश्चित समय के दौरान ही की जाती है। दूसरी ओर, उमरा एक छोटी तीर्थयात्रा है जिसे साल के किसी भी समय किया जा सकता है।

किसानों के खाते में आएगा पीएम किसान सम्मान निधि का पैसा

नई दिल्ली: भारत सरकार पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत हर साल गरीब किसानों को 6 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है। 6 हजार रुपये की इस आर्थिक सहायता को सालाना तीन किस्तों के माध्यम से जारी किया जाता है। हर किस्त के अंतर्गत दो हजार रुपये किसानों के बैंक अकाउंट में डीबीटी के माध्यम से भेजे जाते हैं। देश में पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ करोड़ों किसान उठा रहे हैं। देश के किसानों को लंबे समय से पीएम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त का इंतजार है। किसानों के लिए अब खुशखबरी है। किसानों का 17वीं किस्त का इंतजार अब खत्म हो गया है। अभी तक किसानों के खाते में 16 किस्तों का पैसा आ चुका है। अब किसानों को 17वीं किस्त जारी होने का इंतजार है।

कब जारी होगी 17वीं किस्त

नई सरकार का गठन आज 9 जून, 2024 को होने जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सरकार बनने के बाद जून के आखिरी सप्ताह में पीएम किसान सम्मान निधि योजना की 17वीं किस्त को जारी किया जा सकता है। हालांकि, सरकार की ओर से किस्त के पैसों को जारी करने को लेकर कोई आधिकारिक ऐलान नहीं किया गया है। आपको 17वीं किस्त का लाभ मिलेगा या नहीं आप घर बैठे इसका पता लगा सकते हैं। इसके लिए आपको पीएम किसान पोर्टल https://pmkisan.gov.in/ पर विजिट करना होगा।

अभी पूरे कर लें ये काम

पीएम किसान योजना के अंतर्गत ई-केवाईसी करवाना भी अनिवार्य है। धोखाधड़ी को रोकने के लिए और अपात्र किसानों की पहचान करने के लिए ई-केवाईसी को शुरू किया गया है। वहीं अगर आप तय समय तक भू-सत्यापन नहीं करवाते हैं, तो आप किस्त के लाभ से वंचित रह सकते हैं। नियमों के तहत इस काम को करवाना जरूरी है। अगर आपने अपने आधार कार्ड को अपने बैंक खाते से लिंक नहीं करवाया है, तो भी आप किस्त के लाभ से वंचित रह सकते हैं।

अब फिर से चलेगा मोदी 3.0 का जादू समारोह में कई देशों के प्रमुखों ने की शिरकत

नई दिल्ली। नरेंद्र मोदी ने रविवार शाम करीब 7:15 बजे तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इसी के साथ अब उन्होंने जवाहरलाल नेहरू की भी बराबरी कर ली है, जोकि लगातार तीन बार (1952, 1957 और 1962 का आम चुनाव जीतकर) पीएम बने थे। शाम सवा सात बजे राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले समारोह में उनके साथ करीब चार दर्जन मंत्रियों ने भी शपथ ली। इसके पहले शनिवार को सरकार में भागीदारी को लेकर राजग के सहयोगी दलों के बीच सामंजस्य बना लिया गया था कि किस दल को कितनी हिस्सेदारी मिलनी है और पहले चरण में किस-किस सांसद को मंत्रिपरिषद में जगह मिलेगी, इसका भी निर्णय कर लिया गया है। भाजपा के बाद राजग के बड़े दलों में शुमार तेदेपा और जदयू से एक-एक कैबिनेट और एक-एक राज्य मंत्री ने शपथ ली। नई सरकार के स्वरूप में सामाजिक समीकरण और देश के विकास की आकांक्षा का भरपूर ख्याल रखा गया है। सहयोगी दलों का सम्मान और समन्वय बनाए रखने के रास्ते तलाश लिए गए हैं। गृह, वित्त, रक्षा, विदेश के अलावा शिक्षा और संस्कृति जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय भाजपा ने अपने ही पास रखे हैं।

नए चेहरे भी हुए शामिल

गौरतलब है कि मनोनीत प्रधानमंत्री आमतौर पर शपथ ग्रहण समारोह से पहले नए मंत्रियों से मिलते थे। इस बार कई नए चेहरों को भी मोदी मंत्रिमंडल में जगह मिली। भाजपा नेता मनोहर लाल खट्टर, सी आर पाटिल, शिवराज सिंह चौहान, बंदी संजय कुमार और रवनीत सिंह बिट्टू केंद्रीय मंत्रिपरिषद में शामिल हुए। भाजपा के सहयोगियों से भी कई नए चेहरे सरकार में शामिल किए गए। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को उन विदेशी नेताओं की सूची जारी की जो रविवार शाम को पीएम मोदी और मंत्रिपरिषद के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। विदेशी नेताओं में श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू, सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीफ, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ, नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड', भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे शामिल हुए।

शपथ ग्रहण समारोह से पहले अखिलेश यादव का भाजपा पर निशाना

मोदी सरकार 3.0 के शपथ ग्रहण समारोह से पहले अखिलेश यादव ने भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'ऊपर से जुड़ा कोई तार नहीं,

नीचे कोई आधार नहीं अधर में जो है अटकी हुई वो तो कोई सरकार नहीं'

निर्दलीय विधायक ने बढ़ाई नायब सैनी सरकार की टेंशन

चरखी दादरी: हरियाणा की चरखी दादरी विधानसभा से निर्दलीय विधायक और सांगवान खाप के प्रधान सोमबीर सांगवान ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा तीन निर्दलीय विधायकों को मनाकर वापिस भाजपा के साथ लाने के बयान पर पलटवार किया है। विधायक सोमबीर सांगवान ने स्पष्ट किया कि तीन निर्दलीय विधायकों का कांग्रेस को पूर्ण रूप से बाहरी समर्थन है और रहेगा भी। भाजपा सरकार उन्हें चाहे मंत्री या राष्ट्रपति बनाने का ऑफर करें, वे भाजपा को समर्थन नहीं देंगे। विधायक सोमबीर सांगवान ने अपने निवास पर पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि हरियाणा के तीन निर्दलीय विधायकों ने कांग्रेस को बाहरी समर्थन दिया हुआ है। तीनों निर्दलीय विधायक भाजपा में नहीं जाएंगे। सीएम उनको लोभ और लालच देना छोड़ें वे अपने फैसले पर अडिग हैं। सांगवान ने कहा कि तीन निर्दलीय विधायकों ने कांग्रेस को समर्थन देकर हरियाणा में भाजपा सरकार को अल्पमत में लाकर छोड़ दिया है।

'फ्लोर टेस्ट कराएंगे तो हो जाएंगे फेल'

सरकार हरियाणा में विधायकों का फ्लोर टेस्ट कराएगी तो फेल होगी। वहीं सांगवान खाप प्रधान होने के नाते सोमबीर सांगवान ने कंगना रनौत पर ओच्छे शब्दों का प्रयोग करने का आरोप लगाया। कहा कि सीआ-ईएसएफ की महिला जवान की भावनाओं को ठेस पहुंची तो उन्होंने ऐसा करने पर मजबूर होना पड़ा। कंगना रनौत के बयानों से समाज में गलत संदेश गया और इसी का परिणाम है कि आवेश आकर महिला जवान ने कंगना पर थप्पड़ माना पड़ा। कंगना को समाज में तानाबाना का भी ख्याल रखना चाहिए और ओच्छे ब्यान को उनको खामियाजा भुगतना पड़ा है।

ग्रुप C और D में हरियाणा सरकार करेगी 50 हजार भर्तियां

चंडीगढ़: हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शनिवार को कहा कि प्रदेश में जल्द ही विभिन्न विभागों में ग्रुप सी और डी के 50 हजार पदों पर भर्तियां होंगी। सीएम ने कहा कि 2014 से लेकर आज तक हरियाणा सरकार ने करीब एक लाख भर्तियां की हैं। आने वाले तीन महीनों के भीतर 50 हजार भर्तियों की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। सैनी ने आरोप लगाया कि हरियाणा में सक्रिय 'भर्ती रोको गैंग' ऐसे प्रयासों में रोड़े अटकाता रहा है लेकिन अब इस गैंग के मंसूबे सफल नहीं होंगे। सैनी ने कहा कि ग्रुप सी और डी की जिन श्रेणियों की भर्तियां लंबित हैं, उन्हें जल्द पूरा करने के निर्देश जारी किए गए हैं। इसके अलावा विभिन्न विभागों में हरियाणा कौशल रोजगार निगम लिमिटेड के जरिए होने वाली नियुक्तियों की प्रक्रिया को भी जल्द पूरा किया जाएगा।

चिंता करने की जरूरत नहीं: सीएम सैनी

सीएम ने नौकरियों में सामाजिक-आर्थिक आधार पर मिलने वाले पांच अंक के खिलाफ हाई कोर्ट के फैसले पर कहा कि सरकार की लीगल टीम इसके हर पहलू के आधार पर अपनी तैयारी कर चुकी है। जल्द ही प्रदेश सरकार हाई कोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देगी, जिससे युवाओं को इंसाफ मिल सके। सीएम ने दावा किया कि हाई कोर्ट के फैसले के बाद जिन युवाओं को नौकरी का खतरा पैदा हुआ है, उन्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। सरकार हर संभव प्रयास करके उनकी नौकरी को बचाएगी। हाल ही में पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने हरियाणा में सरकारी भर्तियों में मिलने वाले सामाजिक आर्थिक मानदंड के 5 अंकों को संविधान के विरुद्ध करार दिया और सरकार के इस फैसले को रद्द कर दिया। इस फैसले से भर्तियां सिर्फ मेरिट के आधार पर हो सकेंगी।

'कांग्रेस ने चुनाव में झूठ फैलाया'

सीएम नायब सिंह सैनी ने शनिवार को करनाल में लोगों की शिकायतें सुनीं। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधा और कहा कि उसने चुनाव में झूठ फैलाया, क्योंकि उसके पास कोई मुद्दा नहीं था। सैनी ने कहा कि कांग्रेस ने लालच दिया कि लोगों के खातों में पैसे आएंगे और अब लोग पैसे लेने के लिए नेताओं के घरों के बाहर खड़े हैं। कांग्रेस ने लोगों को बार-बार गुमराह किया कि मोदी आरक्षण खत्म कर देंगे, संविधान बदल देंगे। इस तरह का दुष्प्रचार कांग्रेस और 'घमंडिया' गठबंधन के लोग ही कर सकते हैं। घमंडिया गठबंधन के पास कोई विजन नहीं था, लेकिन पीएम नरेंद्र मोदी को गरीबों की चिंता है और उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए विजन भी है।

पंजाब में नहीं खुला खाता, फिर भी इस सिख चेहरे को मिलेगी मोदी कैबिनेट में जगह

चंडीगढ़: नरेंद्र मोदी आज शाम को प्रधानमंत्री के तौर लगातार तीसरी बार शपथ लेंगे। इससे पहले मोदी कैबिनेट में जिन सांसदों और नेताओं को जगह मिलने की संभावना है, उन्हें फोन कॉल के जरिए पीएमओ पहुंचने के लिए कहा गया। पंजाब की 13 सीटों में से बीजेपी एक भी सीट नहीं जीत पाई थी। इस करारी हार बावजूद रवनीत सिंह बिट्टू को पीएमओ से फोन कॉल आया, जिसके बाद वो दिल्ली पीएमओ पहुंच गए हैं। यानि उन्हें भी मोदी 3.0 में जगह मिल सकती है। बता दें कि बिट्टू तीन बार कांग्रेस से सांसद रह चुके हैं और पंजाब के दिवंगत सीएम बेअंत सिंह के पौत्र हैं। किसानों के खिलाफ बिट्टू मुखर हैं और पंजाब के किसानों को चुनावों के दौरान धमकी तक दी थी। बिट्टू लोकसभा चुनाव से पहले ही कांग्रेस से बीजेपी में शामिल हुए थे।

बिट्टू ने कही ये बात

दिल्ली जाने से पहले रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि मेरे लिए ये बहुत बड़ी बात है। मुझे चुनाव हारने के बाद भी अपने मंत्रिमंडल में चुना है। इस बार पंजाब को प्राथमिकता दी गई है। मैं 2027 में विधानसभा चुनाव जीतने के लिए बीजेपी के लिए जमीन तैयार करूंगा। बिट्टू ने इस दौरान कांग्रेस पर भी तंज कसा। उन्होंनेए कहा कि महज 2 साल पहले पंजाब की जनता ने कांग्रेस को नकार दिया था। आप जो काम कर रही है, वो सबको पता है। इसलिए लोगों के पास एक ही विकल्प है, वो है भाजपा। इसके साथ ही कहा कि अगर मौका मिला तो मैं पंजाब का मुख्यमंत्री बनना चाहूंगा।

कौन हैं बिट्टू

रवनीत सिंह बिट्टू पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते हैं। उन्हें लुधियाना लोकसभा सीट पर पंजाब कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने इस बार चुनावी शि-ाकस्त दी। वह कांग्रेस के टिकट पर तीन बार लोकसभा चुनाव जीत चुके हैं। इसके बावजूद उन्होंने लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी का दामन थाम लिया था।

'जीरो' के बाद ऐक्शन में मायावती, यूपी में मंडलीय व्यवस्था खत्म

लोकसभा चुनाव में करारी हार के बाद बसपा प्रमुख मायावती ऐक्शन मोड में आ गई हैं। यूपी में उन्होंने संगठन मे बड़ा फेरबदल करते हुए पूरा सिस्टम ही बदल दिया है। यहां मंडलीय व्यवस्था खत्म करके अब सेक्टर सिस्टम लागू किया है। वहीं हरियाणा में सीधे प्रदेश अध्यक्ष राजवीर सोरखी पर गाज गिरी है। उनको पद से हटा दिया गया है। उनकी जगह धर्मपाल तिगरा को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है। अयोध्या, देवीपाटन, बस्ती और गोरखपुर मंडल का एक सेक्टर बनाया गया है। प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल को इस सेक्टर का मुख्य इंचार्ज बनाया गया है। उनके साथ घनश्याम खरवार, सुधीर कुमार भरत, सुरेश कुमार गौतम को भी इंचार्ज बनाया गया है।

अलीगढ़, आगरा, कानपुर और प्रयागराज सेक्टर में श्मसुद्दीन राइन के साथ सूरज सिंह जाटव और परवेज कुरील को जिम्मेदारी दी गई है। मुनकाद अली को मेरठ, सहारनपुर, मुरादाबाद और बरेली का मुख्य जोन इंचार्ज बनाया गया है। इसके अलावा मिजार्पुर, वाराणसी और आजमगढ़ को मिलाकर एक सेक्टर बनाया गया है। वहीं लखनऊ झांसी, चित्रकूट का अलग सेक्टर होगा। इसमें शमसुद्दीन राइन को मुख्य इंचार्ज बनाया गया है।

मायावती ने मंडलवार पदाधिकारियों के साथ बैठकें शुरू कर दी हैं। जल्द ही कई और सेक्टरों के इंचार्जों की तैनाती की जाएगी। उसके बाद जिला स्तर तक के सभी पदाधिकारियों के साथ बैठक करेंगी।

रसूलपुर का 25 वर्षीय युवक लापता,दो साथियों पर लगाया बंधक बनाने का आरोप

पुलिस ने केस दर्ज कर चलाया सर्च अभियान

कनीना सुनील दीक्षित

कनीना क्षेत्र से व्यस्क युवक व युवतियों सहित महिला एवं पुरूषों के गायब होने की संख्या लगातार बढती जा रही है। कनीना सिटी एवं सदर थाना के अंतर्गत गावों से इस बारे में लगभग 72 घंटे के अंतराल में एक व्यक्ति के लापता होने की सूचना मिल रही है। जिनमें से कुछ व्यक्ति ऑफ द रिकार्ड मिल जाते हैं जबकि कुछ की थाने में प्राथमिकी दर्ज की जाती है। गुमशूदा व्यक्ति के लिए थाने में आईपीसी की धारा 346 के तहत केस दर्ज किया जाता है। उसके बाद पुलिस तलाश कर बरामद करती है, तदुपरांत कोर्ट में पेश कर बयान कलमबध कराने के बाद परिजनों के हवाले किया जाता है। इस संदर्भ में रसूलपुर निवासी जोगेंद्र कुमार ने कनीना सदर थाना में शिकायत देकर उसके भाई योगेश,25 वर्ष के गायब करने का दो अन्य युवकों पर आरोप लगाया है। जोगेंद्र कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि उसका भाई योगेश बीती 7 जून को शाम 7 बजे दो साथियों रवि व राजकुमार के साथ कुएं पर बैठा हुआ था। इसी दौरान एक सफेद रंग की कार वहां आई जिसमें अंकित वासी गुढा व सरवर वासी झज्जर बैठा हुआ था। जो उनके कुएं पर आए थे। इससे पूर्व अंकित का चचेरा भाई दीपक भी कुएं पर आता रहा है। उसके बाद से योगेश का कोई अता-पता नहीं है। उसका मोबाईल फोन बंद आ रहा है। जोगेंद्र ने अंकित व सरवर पर योगेश को बंधक बनाकर अज्ञात स्थान पर रखने का आरोप लगाया है। पुलिस ने योगेश की गुमशूदगी का केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। थाना इंचार्ज निरीक्षक रामनाथ ने बताया कि जोगेंद्र कुमार की शिकायत पर युवक की गुमशूदगी का केस दर्ज कर सर्च अभियान चलाया गया है। जल्द ही उसे बरामद कर लिया जाएगा।

विश्व योग दिवस को लेकर योग शिविर का आयोजन

युवाओं को स्वस्थ रहने तथा फिजीकल फिट रहने का दिया जा रहा प्रशिक्षण

कनीना सुनील दीक्षित

आगामी 21 जून को विश्वभर में मनाए जाने वाले विश्व योग दिवस के नजदीक आने की आहट सुनाई देते ही क्षेत्र में योग शिविरों का आयोजन शुरू हो गया है। विभिन्न गावों सहित कनीना में भी योग शिविर का संचालन किया गया है। कनीना के डीएवी प्रांगण में आयोजित योग शिविर में जोगेंद्र सिंह जैनाबाद तथा राजेश सिंह कनीना द्वारा युवाओं को योग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस शिविर में करीब 50 युवा हिस्सा ले रहे हैं। शिविर में भारत विकास परिषद शाखा

कनीना की ओर से मोहन सिंह, अनिल यादव व संरक्षक कंवर सेन वशिष्ठ ने युवकों को योग के फायदे बताए। उन्होंने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का एक आवश्यक अंग है। राजेश सिंह ने कहा कि योग शिविर में प्रतिदिन 50 युवा साधक आते हैं। जिन्हें योग सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए फिजीकल तथा लिखित परीक्षा का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। मोहन सिंह ने कहा कि भाविप शाखा की ओर से जल्द ही पौधा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण जरूरी है। उन्होंने कहा कि युवा अपनी उर्जा को नशे की बजाय सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों में लगाएं। कनीना के अलावा गुढा, कोटिया,भोजावास, खेडी सहित विभिन्न गावों में योग शिविरों का आयोजन किया गया है।

जहां ग्रामीण योग कर स्वस्थ रहने की कला को आगे बढा रहे हैं। इस अवसर पर पार्षद राजेंद्र सिंह, सवाई सिंह उपस्थित थे।

होडल विधायक जगदीश नायर ने शेर सिंह नंबरदार के दिहांत होने पर दी श्रद्धांजलि

समाचार गेट

हरिओम भारद्वाज_होडल:आपको बता दे की होडल के शेर सिंह नंबरदार का करीब 6 दिन पहले स्वर्गवास हो गया शेर सिंह नंबरदार अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर गए है नंबरदार ने करीब 30 साल पूरी ईमानदारी से नंबर रहे उसी दौरान होडल मै पहले नगर पालिका मै वार्ड नंबर 12 से करीब 20 साल पार्षद रहे थे इन कार्यकाल में नंबरदार ने स्वच्छ छबि रही थी बता दे की शेर सिंह नंबरदार की शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे होडल के बीजेपी विधायक जगदीश नायर,पलवल से कर्ण दलाल के भाई ने शोक सभा मै पहुंचे और नबरदार की फोटो पर श्रद्धांजलि देते हुए पुष्प अर्पित किए जगदीश नायर ने कहा की नाम्बदार एक नेक दिल इंसान थे नायर ने कहा उन्होंने 20 साल नगर पालिका मै पार्षद रहते हुए निश्वार्थ सेवा की थी भगवान उनकी आत्मा को शांति दे और उन्हें भगवान अपने चरणों में शान्ति दे इस मौके पर विधायक जगदीश नायर , सतपाल, सचिन जैन, ब्लॉक समिति चेयरमैन के प्रतिनिधि के रूप मै वीर सिंह, प्रेम दलाल, सहित कई नेताओं ने एक मिनट मोन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की

कनीना मंडी में आयोजित हृद्य एंव नेत्र रोग जांच शिविर में 120 मरीजों ने उठाया लाभ

कनीना सुनील दीक्षित

सेवा भारती की ओर से कनीना मंडी स्थित लाला शिवलाल की धर्मशाला में रविवार को आयोजित 75वें हृद्य एवं नेत्र रोग जांच शिविर में 120 मरीजों ने लाभ उठाया। सुबह दस बजे से दोपहर एक बजे तक आयोजित इस शिविर में हृद्य रोग विशेषज्ञ डॉ अश्वनी यादव व उनकी टीम द्वारा मरीजों की जांच कर दवा वितरित की वहीं नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ संतोष व मनमत ने नेत्रों की जांच की। शिवकुमार अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को शिविर का आयोजन किया जाता

है। जिसमें मरीजों को जांच के साथ परामर्श भी दिया जाता है।

इस मौके पर डॉवेदप्रकाश शर्मा,सुरेश शर्मा, श्यामसुंदर,अमित कुमार,योगेश अग्रवाल,सोमदत्त शर्मा,मोहर सिंह, प्रेम सिंगला, जगदीश गुप्ता उपस्थित थे।

दसवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 10 जून से 12 जून तक जिला एवं ब्लॉक स्तर पर दिया जाएगा तीन दिवसीय प्रशिक्षण

जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डा. यशबीर गहलावत

अनिल मोहनियां नूंह

दसवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 10 जून से 12 जून तक प्रातः 6 बजे से प्रातः 07:30 बजे तक जिला स्तर तथा ब्लाक स्तर के प्रशासनिक अधिकारी, अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी , सरंपच, पंच अन्य निर्वाचित सदस्य पूलिस विभाग के अधिकारी कर्मचारी, एन.सी.सी. कैडेट, स्काउट कैडेट एवं इच्छुक जन साधारण को योग प्रशिक्षण आयुष.विभाग के योग विशेषज्ञ, आयुष योग सहायकों, योग समितियों के योग प्रशिक्षक, प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा, पी.टी.आई., डी.पी.आई., खेल विभाग के योगा ट्रेनर एवं पुलिस विभाग के प्रशिक्षित योग प्रशिक्षकों द्वारा दिया जाएगा।

सरकारी एवं प्राईवेट स्कूलों के प्रवक्ता शारीरिक शिक्षको, पी.टी.आई.व डी.पी.ई. को आयुष विभाग, पतंजलि के योगा ट्रेनरो, सहायको द्वारा निम्न

विवरण अनुसार निम्नलिखित स्थानों पर तीन दिवसीय योग प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डा. यशबीर गहलावत ने बताया इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सामान्य योग प्रोटोकोल के अनुसार आसन व प्राणायाम कराए जाएगें तथा इनके लाभों के बारें में बताया जाएगा। उन्होंने बताया कि योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह केवल व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन शैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।

राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ प्रतियोगिता के लिए जिला में 10 जून तक 24 ओलंपिक खेलों की ओपन कैटेगरी

उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने जानकारी देते हुए बताया कि राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ प्रतियोगिता के लिए जिला में 10 जून तक 24 ओलंपिक खेलों की ओपन कैटेगरी के लिए महिला एवं पुरुष खिलाड़ी लगातार चयन प्रक्रिया में विभिन्न खेलो अनुसार निर्धारित किए गए स्थानों पर लगभग 500 से अधिक महिला एवं पुरुष खिलाड़ी जिले की खेल महाकुंभ टीम में अपने आप को स्थापित करने के लिए अपने शौर्य कौशल का प्रदर्शन कर रहे हैं। डीसी ने बताया कि चयन प्रक्रिया में चयनित खिलाड़ी ही राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ प्रतियोगिता में भाग लेंगे राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ प्रतियोगिता 15 जून से 18 जून तक खेल विभाग द्वारा निर्धारित किए गए स्थान पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके पदक तालिका में जिले का नाम दर्ज करवाएंगे। जिला स्तरीय चयन प्रक्रिया

में सभी खेलों के प्रशिक्षकों एवं अनुभवी सदस्यों द्वारा चयन प्रक्रिया में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का चुनाव करके खिलाड़ियों को जिले का प्रतिनिधित्व करने के लिए राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रतिभागिता करवाएंगे लगभग सभी खेलों की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अगर कुछ खेल चयन प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई है तो वह 10 जून सुबह तक पूरी कर ली जाएगी ओपन कैटेगरी की चयन प्रक्रिया के लिए खिलाड़ियों और अभिभावकों में जोश और उत्साह दिखाई दिया खेल विभाग नूंह सभी खेलों में प्रतिभागिता करने के लिए खिलाड़ियों का चयन करेगा। राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को खेल विभाग की तरफ से टी-शर्ट और लोवर दी जाएगी। खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के लिए परिवहन की व्यवस्था और खाने-पीने रहने की व्यवस्था हरियाणा सरकार के खेल विभाग द्वारा की जाएगी। प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त खिलाड़ियों को पदक सर्टिफिकेट के साथ-साथ नकद इनाम भी दिया जाता है। चयन प्रक्रिया के दौरान चयनित खिलाड़ियों को जिला खेल अधिकारी एवं मुक्केबाजी प्रशिक्षक मनोज कुमार ने शुभकामनाएं दी और चयन प्रक्रिया में निर्णयको की भूमिका निभाने वाले प्रशिक्षकों और तकनीक अधिकारियों का धन्यवाद किया।

जिला व उप मंडल स्तर पर आज से आयोजित होगी समाधान सभाएं :- उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा

प्रातः 10 बजे से लेकर दोपहर 1 बजे तक रोजाना आमजन की समस्याओं का किया जाएगा समाधान

उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने कहा है कि आमजन की समस्याओं का समाधान करने के लिए रोजाना लघु सचिवालय के वीसी रूम में समाधान सभा का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मुख्य सचिव द्वारा जारी किए गए दिशा निदेर्शों के अनुसार जिला व उप मंडल स्तर पर रोजाना समाधान सभा आयोजित की जाएगी। समाधान सभा में आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जाएगा । उन्होंने बताया कि समाधान सभा का समय प्रातः 10 बजे से लेकर दोपहर 1 बजे तक निर्धारित किया गया है । धीरेंद्र खड़गटा ने बताया कि जिला स्तर पर आयोजित होने वाली समाधान सभा 10 जून से आरंभ हो जाएगी और रोजाना आयोजित की जाएगी । उन्होंने बताया कि जिला स्तर पर आयोजित होने वाली समाधान सभा में एडीसी सिटिजन रिसोर्सेस इंफॉर्मेशन डिपार्टमेंट (क्रिड) की टीम सहित, जिला पुलिस अधीक्षक, एसडीएम हेड क्वार्टर, नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कार्यकारी अभियंता, दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम के कार्यकारी अभियंता, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला कल्याण अधिकारी व जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक समाधान सभा में उपस्थित रहेंगे । डीसी ने कहा कि उपरोक्त अधिकारियों के अलावा सभी विभागों के विभाग अध्यक्ष मुख्यालय पर मौजूद रहेंगे । अनुपस्थित रहने वाले अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी । उन्होंने कहा कि समाधान सभा में आने वाली शिकायतों के समाधान की प्रगति की नियमित रूप से ट्रैकिंग की जाएगी और डॉक्युमेंट मैनेजमेंट सिस्टम (डीएमएस) के माध्यम से एक्शन टेकन रिपोर्ट का रिकॉर्ड रखा जाएगा । उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने बताया कि इसी प्रकार से जिला के फिरोजपुर झिरका, पुन्हना व तावडू उप मंडल पर भी निर्धारित समय अनुसार रोजाना समाधान सभाओं का आयोजन किया जाएगा । उपमंडल स्तर पर आयोजित होने वाली समाधान सभा में संबंधित डीएसपी, नगर पालिकाओं के कार्यकारी अधिकारी, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी, परिवार पहचान पत्र से संबंधित स्टाफ,

जन स्वास्थ्य विभाग तथा बिजली निगम के एसडीओ इन सभा में उपस्थित रहकर आमजन की समस्याओं का समाधान करने का काम करेंगे ।

मालवाहक जहाज पर हूती विद्रोहियों ने दागी मिसाइल, जानमाल का नुकसान नहीं

नई दिल्ली। अदन की खाड़ी में एंटीगुआ और बारबुडा के झंडे वाले एक मालवाहक जहाज पर संदिग्ध रूप से यमन के हूती विद्रोहियों ने मिसाइल से रविवार को हमला कर दिया। मिसाइल जहाज के अगले हिस्से पर गिरी जिससे उसमें आग लग गई लेकिन जहाज में सवार लोगों ने आग पर काबू पा लिया। मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक हूती विद्रोहियों ने मालवाहक जहाज पर एक और मिसाइल दागी गई लेकिन यह जहाज पर नहीं गिरी। इसके बाद आस-पास छोटी नौकाओं पर सवार लोगों ने पोत पर गोलीबारी की। उसने बताया कि हमले में कोई हताहत नहीं हुआ है। ब्रिटेन की सेना के 'यूनाइटेड किंगडम समुद्री व्यापार परिचालन केंद्र' ने भी शनिवार देर रात अदन के समीप उसी क्षेत्र में हमले की सूचना दी, लेकिन इसके बारे में विस्तार से कोई जानकारी नहीं दी। हूती विद्रोहियों ने करीब एक दशक पहले यमन की राजधानी पर कब्जा कर लिया था और इसके बाद से ही वह सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन से लड़ रहा है।

नीट परीक्षा में गड़बड़ी पर हजारों छात्र-छात्राओं ने बीएचयू के गेट पर प्रदर्शन किया

वाराणसी । नीट परीक्षा में गड़बड़ी को लेकर वाराणसी में तैयारी करने वाले छात्रों का गुस्सा फूट रहा है। अलग-अलग कोचिंग संस्थानों के हजारों छात्र-छात्राओं ने बीएचयू के मेन गेट पर जमकर विरोध प्रदर्शन किया। छात्रों का कहना है कि नीट यूजी परीक्षा को निरस्त किया जाए। छात्रों की नारेबाजी के बाद पुलिस प्रशासन ने उन्हें समझा बूझकर वापस भेजा। इस बीच धरना प्रदर्शन में शामिल एक छात्र ने कुछ ही सेकेंड में नीट में गड़बड़ियां गिनवाकर एनटीए के दावों पर भी सवाल खड़े कर दिए। मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की परीक्षा नीट का रिजल्ट आने के बाद पूरे देश में नीट की परीक्षा प्रणाली और उसके रिजल्ट पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। इसकी आवाज आज वाराणसी पीएम मोदी के संसदीय क्षेत्र में भी पहुंच गई जहां हजारों छात्र-छात्राओं ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के मेन गेट पर पहुंचकर जमकर विरोध प्रदर्शन किया। छात्र-छात्राओं के हाथों में तख्तियां थीं। विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारी छात्र-छात्राओं ने फिर से नीट की परीक्षा कराने की मांग की और दोषियों पर कार्रवाई की मांग की है।

केरल विधानसभा के सोमवार से शुरू होने वाले सत्र के हंगामेदार रहने की उम्मीद

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल विधानसभा के सोमवार से शुरू होने वाले 28 दिवसीय सत्र के हंगामेदार रहने की उम्मीद है। विपक्षी कांग्रेस नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) राज्य की वामपंथी सरकार पर हाल में शराब नीति विवाद से लेकर लोकसभा चुनाव में उसकी जबरदस्त हार तक कई मुद्दों को लेकर निशाना साध सकता है। लोकसभा चुनाव के नतीजों की घोषणा के बाद पहली बार सदन की बैठक हो रही है। इस चुनाव में यूडीएफ ने 18 सीट पर जीत दर्ज की जबकि सत्तारूढ़ वाम लोकतान्त्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को एक-एक सीट मिली है।

यूडीएफ विधायक जहां आम चुनाव में अपनी ऐतिहासिक सफलता के बाद पुनः आत्मविश्वास के साथ सत्र में भाग लेंगे, वहीं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेतृत्व वाले एलडीएफ के विधायक अपनी हार से उभरने का प्रयास करेंगे। सदन में दोनों पारंपरिक मोर्चों के बीच त्रिशूर

लोकसभा सीट पर भाजपा द्वारा भारी बहुमत से जीत दर्ज कर केरल में अपना पहला खाता खोलने को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी देखने को मिल सकता है। विधानसभा अध्यक्ष ए एन शमसीर ने शनिवार को कहा था कि 15वीं केरल विधानसभा का 11वां सत्र 10 जून से शुरू होगा और 25 जुलाई को समाप्त होगा। उन्होंने कहा था कि 28 दिवसीय सत्र वित्त वर्ष 2024-25 के लिए बजट प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा करने और उन्हें पारित करने के लिए बुलाया जा रहा है।

नीतीश के पास बेहतर मौका है बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने का

पटना। राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव की बेटी और हाल ही में पाटलिपुत्र से सांसद चुनी गई मीसा भारती ने कहा है कि इस वक्त बिहार के सीएम नीतीश कुमार के पास बहुत ही बेहतर मौका है बिहार को चमकाने का। वो केंद्र की राजनीति में किंग मेकर की भूमिका में हैं। ऐसे में चाहें तो बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाकर राज्य की तस्वीकर और तकदीर दोनों बदल सकते हैं। मीसा भारती ने कहा कि यह पुरानी मांग रही है और डबल इंजन की सरकार है। आज तक प्रधानमंत्री ने यह मांग पूरी नहीं की है, लेकिन ये अच्छा मौका है उन्हें मांग करनी चाहिए। प्रधानमंत्री को बिहार की मांग पूरी करनी चाहिए। मीसा भारती ने कहा कि नीतीश कुमार को मांग करनी चाहिए और बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलवाना चाहिए और बंद चीनी मिलों को खुलवाना चाहिए। नीतीश कुमार का कहना था कि लोकसभा चुनाव के बाद एक लाख नौकरियां देंगे। इस पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार क्या-क्या कहते थे, लेकिन जब हम 17 महीने सरकार में आए तब तेजस्वी ने सभी मांग पूरी की। नीतीश जी इतना सपोर्ट कर रहे हैं तो बिहार को महत्वपूर्ण विभाग भी मिलने चाहिए। जिससे बिहार के विकास में योगदान मिल सके। हम लोग अग्नि वीर के अलावा जिन मुद्दों पर बात करते आए हैं उन्हें संसद में उठाएंगे।

कंगना को थप्पड़ मारने वाली कुलविंदर ने मांगी माफी

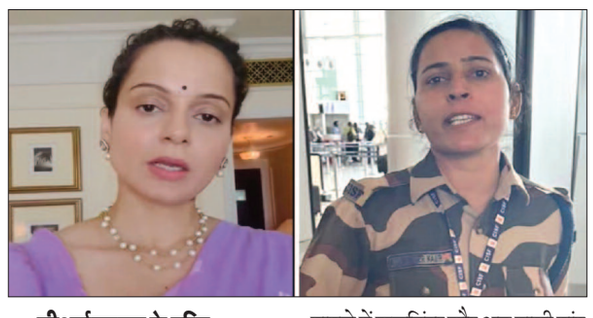

--सीआईएसएफ के वरिष्ठ अधिकारी विनय काजला ने दी जानकारी

चंडीगढ़, (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से चुनी गई सांसद कंगना रनौत को थप्पड़ मारने वाली कुलविंदर अब माफी मांग रही है। यह कहना है कि सीआईएसएफ के वरिष्ठ अधिकारी विनय काजला का। काजला ने कहा कि इस घटना के बाद वह चंडीगढ़ एयरोपर्ट पहुंचे थे। उन्होंने पूरी जानकारी हासिल की। उन्होंने बताया कि मोहाली पुलिस ने कुलविंदर कौर के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। काजला ने माना कि सुरक्षा में लापरवाही हुई है और इसकी जांच शुरू कर दी है।

विनय काजला ने बताया कि वह कंगना रनौत से मुलाकात कर चुके हैं। इस घटना के लिए कंगना से माफी भी मांगी है। काजला ने बताया कि इस मामले में कुलविंदर कौर अब माफी मांग रही है। वहीं कंगना ने काजला से पूछा कि कुलविंदर ने उन्हें थप्पड़ मारने की कोशिश क्यों की? कुलविंदर को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है। इस पर काजरा ने कहा कि उसके खिलाफ जांच अभी भी जारी है।

कंगना को थप्पड़ मारने के बाद महिला सिपाही कुलविंदर कौर ने कहा था कि किसान प्रदर्शन पर उनके रुख को लेकर वो नाराज थीं। उसने शुक्रवार को एक नोट में लिखा कि मुझे यह नौकरी खोने का डर नहीं है...मैं अपनी मां के सम्मान के लिए ऐसी हजारों नौकरियां खोने को तैयार हूं। बता दें कि कुलविंदर ने चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर कंगना रनौत को थप्पड़ मारा था। यह घटना तब हुई जब वह दिल्ली जाने के लिए फ्लाइट का इंतजार कर रही थीं। थप्पड़ मारने पर कुलविंदर कौर ने उन पर किसानों का अपमान करने का आरोप लगाया था।

तिगांव रोड पर साई धाम में भंडारे का आयोजन

फरीदाबाद। शिरडी साईं बाबा टेंपल समिति की ओर से रविवार को तिगांव रोड स्थित सांई धाम पर भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें सैंकडों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। संस्था के समन्वयक नरेंद्र जैन ने बताया की साईं धाम में प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक भंडारा प्रसाद वितरित किया जाता है। जिसमें सैकड़ो लोग भंडारा प्रसाद ग्रहण करते हैं। । संस्था के संस्थापक मोतीलाल ने द्वारा इस तरह के कई सामाजिक कार्य सांई धाम में चलाए जा रहे हैं। जिसमें मुख्य तौर पर बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा, निशुल्क सिलाई सेंटर , कंप्यूटर शिक्षा एवं निशुल्क औषधालय प्रमुख हैं। भंडारा वितरण में स्कूल प्रिंसिपल बीनू शर्मा एवं मुख्य प्रबंधक के पिल्लै का विशेष योगदान रहता है

कार्य दिवस पर प्रतिदिन लगेगे समाधान शिविर : डीसी विक्रम सिंह

फरीदाबाद। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि सभी कार्य दिवस पर प्रतिदिन समाधान शिविर लगाए जाएंगे। डीसी ने कहा कि जिला स्तर उपायुक्त और उपमण्डल स्तर पर एसडीएम की अध्यक्षता में समस्याओं का समाधान किया जाएगा। उन्होंने आगे बताया कि सभी कार्यदिवस में प्रतिदिन ज़िला स्तर और सब डिवीजन स्तर पर विशेष समाधान शिविर लगाये जाएंगे। विशेष समाधान शिविर का समय प्रतिदिन कार्य दिवस पर सुबह 9 बजे से 11 बजे तक के लिए होगा। इनमें परिवार पहचान पत्र, प्रॉपर्टी आईडी और बुढ़ापा पेंशन में आ रही त्रुटियों को दूर किया जाएगा। उन्होंने आगे बताया कि जिला स्तर पर उपायुक्त की अध्यक्षता में इस समय अवधि में समस्याए सुनी जाएगी और सब डिविजन स्तर पर एसडीएम अध्यक्षता करके समस्या सुनके समाधान करेंगे।

यातायात पुलिस टीम ने वीडियो वैन के माध्यम से वाहन चालकों को हार्डवेयर व मेट्रो चौक पर ट्रैफिक नियमों के प्रति किया जागरूक

फरीदाबाद। पुलिस उपायुक्त ट्रैफिक ऊषा के द्वारा दिए गए दिशा-निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए यातायात पुलिस द्वारा आमजन को सडक सुरक्षा, यातायात नियमों के बारे में लगातार जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में आज ट्रैफिक इंस्पेक्टर दर्पण द्वारा हार्डवेयर चौक एवं मेट्रो चौक पर नागरिकों एवं वाहन चालकों को जागरूक किया गया। यातायात पुलिस ने यातायात नियमों के प्रति जागरुक करते हुए ट्रैफिक इंस्पेक्टर दर्पण ने वाहन चालकों को बताया कि सडक सुरक्षा और यातायात नियम सभी लोगों की सुरक्षा और सुविधा के लिए महत्वपूर्ण हैं तथा वर्तमान में सडकों पर होने वाले दुर्घटनाओं पर नियंत्रण करने के लिए हमें यातायात नियमों का पालन करने चाहिए। उन्होंने बताया कि सडक दुर्घटनाओं का सीधा असर हमारे जीवन पड़ता है। यातायात नियमों का पालन करना सुरक्षित सफर का महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए सभी को सीट बेल्ट का उपयोग करना चाहिए और वाहन चालक को निर्धारित स्पीड लिमिट का पालन करना चाहिए। इसके अलावा आमजन को अन्य ट्रैफिक नियमों जैसे कि ट्रैफिक सिग्नल का पालन करने, लेन ड्राइविंग, उच्च गुणवत्ता वाले हेलमेट का उपयोग करने इत्यादि के बारे में विशेष रूप से जागरूक किया गया। सडक सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए संबंधित संगठनों को भी अपनी जिम्मेदारियों का पूरा निर्वहन करना चाहिए। आमजन को सडक दुर्घटना से बचने के लिए वाहनों के तकनीकी मानकों का पालन करना चाहिए। यातायात पुलिस द्वारा नागरिकों और वाहन चालकों को सडक सुरक्षा एवं नियमों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे है ताकि सडक दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाकर यातायात को प्रभाशाली रूप प्रदान किया जा सके। सडक सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए हम सभी को एकजुट होकर यातायात नियमों की शिक्षा का प्रसार करना चाहिए। इसलिए सडक सुरक्षा को जीवन का प्रमुख अंग बनाने के लिए हमें यातायात नियमों का पालन करना चाहिए।

विशाल मैमोग्राफी व सुजोक थेरेपिस्ट निःशुल्क जांच शिविर

बल्लबगढ़: श्री लखदातार सेवा ट्रस्ट रजि० बल्लभगढ़ द्वारा आयोजित एवं रोटरी क्लब फरीदाबाद हेरिटेज व वैश्य अग्रवाल समाज बल्लभगढ़ के सहयोग से रविवार 9 जून को सुबह 9:00 से दोपहर 2:00 तक अग्रवाल धर्मशाला,चावला कॉलोनी में निःशुल्क विशाल मैमोग्राफी जाँच शिविर एवं श्री गुरु कृपा सुजोक स्माइल आरोग्य केंद्र के सहयोग से सुजोक थेरेपिस्ट बिना दवाई प्राकृतिक तरीके द्वारा सफल इलाज का विशाल निःशुल्क शिविर लगाया गया जिसमें सर्वोदय अस्पताल के मालिक राकेश गुप्ता व अंशु गुप्ता व रोटरी क्लब हेरिटेज के सदस्य दीपक टाटिया,संदीप गोयल,सुरेंद्र कुमार के मार्गदर्शन में डॉक्टर मोनिका व उनकी टीम द्वारा 25 महिलाओं की निशुल्क मेंमोग्राफी जांच की गयी साथ ही श्री गुरु कृपा सुजोक स्माइल आरोग्य केंद्र के डॉक्टर अंगद राव,डॉक्टर बबीता,वीनू गोयल,सरिता व उनकी टीम द्वारा करीब 75 रोगियों की कमर दर्द,,जोड़ों का दर्द,स्लिप डिस्क,माइग्रेन,दमा,पेट गैस,ब्लड प्रेशर,हाथ पैर सुन्न होना,डिप्रेशन व बदहजमी के रोगियों की निःशुल्क जाँच के बाद सुजोक थ्रेपिस्ट बिना दवाई प्राकृतिक तरीके द्वारा निःशुल्क इलाज किया गया। शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में आये युवा कांग्रेस नेता मनोज अग्रवाल जी के द्वारा किया गया शिविर को सफल बनाने में मुख्य रूप से श्री लखदातार सेवा ट्रस्ट (रजि०) बल्लभगढ़ के श्याम सुंदर गोयल चेयरमैन,बृजभूषण गोयल प्रधान,डॉ० एन.डी. तिवारी, वरिष्ठ उपप्रधान, प्रमोद गोयल, कोषाध्यक्ष, प्रदीप गुप्ता, संयोजक,भगवान दास गोयल संरक्षक,मुरारी लाल गर्ग,विपिन शर्मा,प्रमोद टिबड़ेवाल,धीरज सिंगला,मनीष गुप्ता,सुमित गोयल,कार्तिकेय गर्ग,संजीव मित्तल,पुष्कर मंगला,अवदेश मंडल,हेमंत मित्तल,हिमांशु गर्ग व अन्य सदस्यों ने अपना विशेष सहयोग प्रदान किया।

मुख्यमंत्री राहत कोष से इलाज के लिए आर्थिक सहायता लेने की प्रक्रिया हुई सरल: डीसी विक्रम सिंह

जरूरतमंदों को आवेदन के 15 दिन में मिलेगी आर्थिक सहायता

फरीदाबाद। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री राहत कोष से इलाज के लिए आर्थिक सहायता लेने की प्रक्रिया सरल हो रही है। डीसी ने कहा कि जरूरतमंदों को आवेदन के 15 दिन में आर्थिक सहायता मिलेगी। आर्थिक सहायता के रूप में इलाज खर्च का 25 प्रतिशत अधिकतम एक लाख रुपये तक लाभ मिलेगा। इसके लिए आवेदक साल में केवल एक बार ही आर्थिक सहायता ले सकेंगे। डीसी विक्रम सिंह ने बताया कि हरियाणा सरकार ने लोगों को बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने की कड़ी में एक और कदम बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री राहत कोष के तहत चिकित्सा आधार पर वित्तीय सहायता प्राप्त करने वालों को सरल पोर्टल पर सुविधा प्रदान की है। इससे यह प्रक्रिया और अधिक सरल एवं आसान हो गई है। उन्होंने आगे बताया कि अब आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थी आवेदक सरल पोर्टल के माध्यम से सुविधा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मुख्यमंत्री राहत कोष से मिलने वाली आर्थिक सहायता की राशि सीधे आवेदक या लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी। डीसी ने बताया कि आवेदक अपनी पीपीपी यानी परिवार पहचान पत्र आईडी के माध्यम से सरल पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। इस प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए आवेदकों को अपने चिकित्सा बिल, ओपीडी बिल अन्य संबंधित दस्तावेजों को अपलोड कर मुख्यमंत्री राहत कोष (सीएमआर-एफ) से चिकित्सा आधार पर वित्तीय सहायता के लिए आवेदन कर सकते हैं। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि योजना में किए गए बदलावों के तहत यदि कोई बीमारी आयुष्मान भारत, जन आरोग्य योजना में कवर नहीं हो रही है, तो आयुष्मान योजना के लाभार्थियों को भी इस योजना के तहत लाभ मिलेगा।

ये हैं जिला स्तरीय कमेटी के सदस्य:-

डीसी विक्रम सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री राहत कोष के अंतर्गत आर्थिक सहायता के लिए जिला स्तरीय कमेटी का गठन किया गया है, जिसमें संबंधित एमपी, संबंधित एमएलए, उपायुक्त, सिविल सर्जन, नगर निगम, नगर परिषद व नगर पालिकाओं के अध्यक्ष, जिला परिषद के चेयरमैन, पंचायत समिति के चेयरमैन को सदस्य और नगराधीश को नोडल अधिकारी बनाया गया है। डीसी विक्रम सिंह ने आवेदन मंजूरी की पूरी प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि जैसे ही आवेदक आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए पोर्टल पर अपना आवेदन डालेगा तुरंत आवेदन को संबंधित क्षेत्र के सांसद, विधायक, अध्यक्ष जिला परिषद, अध्यक्ष ब्लॉक समिति, मेयर/एमसी के अध्यक्ष के पास भेजा जाएगा और ये जनप्रतिनिधि पांच दिन के भीतर अपनी सिफारिशों के साथ डीसी कार्यालय को भेजेंगे। उसके उपरांत आवेदन को डीसी कार्यालय द्वारा संबंधित तहसीलदार को आवेदक की चल -अचल संपत्ति की वेरिफिकेशन तथा सिविल सर्जन को मेडिकल दस्तावेजों के सत्यापन के लिए भेजा जाएगा। इस पूरी प्रकिया में संपत्ति की वेरिफिकेशन के लिए चार दिन व सिविल सर्जन कार्यालय से जुड़े सत्यापन कार्य के लिए पांच दिन की समय सीमा निर्धारित की गई है। उन्होंने आगे बताया कि इन दोनों विभागों से मिली रिपोर्ट्स को उपायुक्त की संस्तुति के साथ कमेटी के सदस्य सचिव को भेजा जाएगा। जिसे वे सीनियर एकाउंट अधिकारी को भेजेंगे। इसके बाद स्वीकृत की गई राशि सीधे लाभार्थी के खाते में भेज दी जाएगी। डीसी ने कहा कि पूर्व प्रक्रिया की विषमताओं को देखते हुए इस प्रकिया को आम जनता के लिए सरल बनाने के साथ ही समयबद्ध भी किया गया है। मुख्यमंत्री राहत कोष से मिलने वाली आर्थिक सहायता की राशि सीधे आवेदक या लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी।

उन्होंने कहा कि यदि कोई आवेदक दूसरे राज्य में इलाज करवा रहा है। वह चाहता है कि उपचार की राशि सीधे अस्पताल को मिले तो वह संबंधित अस्पताल की बैंकिंग डिटेल्स भी सांझा कर सकता है। डीसी विक्रम सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री राहत कोष से आर्थिक सहायता के रूप में इलाज खर्च का 25 प्रतिशत पैसा ही मिलेगा। जिसकी अधिकतम सीमा एक लाख रुपए निर्धारित की गई है। वहीं आवेदक वित्त वर्ष में केवल एक बार ही इस सुविधा का लाभ ले सकता है।

चुनावी रंजिश के चलते हुए झगड़े मारपीट के मामले में पुलिस टीम ने तीन आरोपियों को किया गिरफ्तार

आरोपियों से वारदात में प्रयोग स्विफ्ट और स्विफ्ट डिजायर गाड़ी बरामद

फरीदाबाद। विगत 25 मई को लोकसभा चुनाव के दिन पल्ला एरिया में बूथ पर टेंट लगाने को लेकर दो पक्षों में कहासुनी हुई थी। जिसकी रंजिश को लेकर आरोपियों ने शिकायतकर्ता को 7 जून के दिन थाना सराय ख्वाजा के एरिया बाईपास रोड पर मारपीट की वारदात को अंजाम दिया था। इसके संबंध में पुलिस उपायुक्त सेन्ट्रल जसलीन कौर ने मामले के संबंध में संज्ञान लेते हुए थाना सराय ख्वाजा में संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश निर्देश दिए थे। पुलिस प्र-वक्ता ने मामले में अधिक जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में रवि, कमल और आकाश उर्फ मोला शामिल

है। सभी आरोपी गांव अनंगपुर के रहने वाले हैं। थाना पुलिस ने सभी आरोपियों को सराय ख्वाजा एरिया से गिरफ्तार किया है। शिकायतकर्ता राजकुमार ने अपनी शिकायत में बताया कि वह गांव बसन्तपुर फरीदाबाद का रहने वाला है। वह पार्षद पद की तैयारी कर रहा है और कांग्रेस पार्टी से सम्बन्ध रखता है। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में बूथ एजेन्ट था जिसका आरोपियों ने टैन्ट नहीं लगने दिया। जिसको लेकर दोनों पक्ष में गाली गलौच हुई। जिसका मुकदमा शिकायतकर्ता राजकुमार के खिलाफ दर्ज है। जिसकी रंजिश को लेकर आरोपी रवि ने अपने साथियों के साथ मिलकर 7 जून को बाईपास रोड पर गाडिड्रों में सवार होकर शिकायतकर्ता की स्कार्पियो को दो गाडी ने रोका और अपने साथियों के साथ मिलकर पिस्टल,

तलवार, चाकू, दाव व डन्डे के साथ मारपीट की वारदात को अंजाम दिया। शिकायतकर्ता ने मामले में आरोपियों द्वारा पैसे छीनने का भी आरोप लगाया है, मुकदमे में तफ्तीश जारी है। आरोपियों को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर जेल भेजा जाएगा।

554 ग्राम गांजे सहित आरोपी को अपराध शाखा बदरपुर बॉर्डर की टीम ने आरोपी को किया गिरफ्तार

फरीदाबाद। अपराध शाखा बदरपुर बॉर्डर की टीम ने नशा तस्करी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है।पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी विकास वासी विनय नगर सैक्टर 91 फरीदाबाद का रहने वाला है। आरोपी को अपराध शाखा टीम ने अपने गुप्त सूत्रों ले प्राप्त सूचना से थाना पल्ला के एरिया विनय नगर में गांजा बेचते हुए काबू किया है। आरोपी से मौके पर 554 ग्राम गांजा बरामद हुआ है। आरोपी के खिलाफ थाना पल्ला में नशा तस्करी की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि आरोपी 600 ग्राम गांजा दिल्ली मदनपुर खादर में किसा अनजान व्यक्ति से 5000 रूपए में प्रयोग करने व बेचने के लिए खरीद कर लाया था। आरोपी पर पूर्व में भी थाना पल्ला व सराय ख्वाजा में नशा तस्करी व शराब तस्करी के 3 मामले दर्ज है। जो माननीय अदालत में विचारधीन है। आरोपी को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर जेल भेजा गया।

श्री महावीर मंदिर सेवा समिति ट्रस्ट के सर्वसम्मति से टेकचंद नन्द्राजोग प्रधान बने

फरीदाबाद। श्री महावीर मंदिर सेवा समिति ट्रस्ट रजि, महावीर नगर ओल्ड फरीदाबाद की मासिक बैठक रविवार को आयोजित की गई। जिसमें ट्रस्ट के सभी सदस्यों अनिल गुप्ता महासचिव, सतपाल चौधरी, चरण सिंह सैनी प्रधान आ-रडब्ल्यूए महावीर नगर ओल्ड फरीदाबाद, योगेश चावला जनरल सेक्रेटरी आरडब्ल्यूए, कृष्णदत्त शर्मा, अनिल वर्मा, किशन शर्मा, सोनू शर्मा, धर्मवीर चौधरी, कमल नन्द्राजोग, राजेश तनेजा, पं. शिवराम शर्मा, प्रेमवीर, पिंटू

सैनी, धीरज वधवा, बोधराज, विक्की मल्होत्रा, पं. राजीव श-स्त्री, प्रेमवीर सिंह व राजेश तनेजा आदि ने भाग लिया तथा मंदिर के निर्माण कार्यों की समीक्षा की।मंदिर के प्रधान मूलराज नन्द्राजोग का गत 19 मार्च को स्वर्गवास हो जाने से यह पद खाली था। इस पद को भरने के लिए मीटिंग में सदस्यों द्वारा मंदिर ट्रस्ट के नए प्रधान का सर्वसम्मति से चयन करते हुए टेकचंद नन्द्राजोग उर्फ टोनी पहलवान को श्री महावीर मंदिर सेवा समिति ट्रस्ट का नया प्रधान नियुक्त किया गया। इस मौके पर नवनियुक्त प्रधान टेकचंद नन्द्राजोग उर्फ टोनी पहलवान ने अपनी नियुक्ति पर सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें पूर्ण आश्वासन दिया कि वे सभी सदस्यों को साथ लेकर चलेंगे और कमेटी सदस्यों को शिकायत का कोई मौका नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि वे मंदिर के निर्माण कार्यों व सौंदर्यीकरण के लिए सक्रियता से जुटे रहेंगे।

वास्कुलिटिस एक ऑटो इम्यून रोग है जो किसी भी उम्र या लिंग में प्रकट हो सकता: डॉ. पुनीत प्रूथी

फरीदाबाद। वास्कुलिटिस एक ऑटो इम्यून रोग है जो किसी भी उम्र या लिंग में प्रकट हो सकता है। इसका सीधा सा अर्थ है रक्त वाहिकाओं में सूजन और इस प्र-कार दर्द और अंग क्षति का कारण बनना। वास्कुलिटिस सोसाइटी भारत में एक है जो सम्मेलनों और सार्वजनिक बैठकों के माध्यम से इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाती है। ऐसी ही एक जागरूकता बैठक का आयोजन एशियन हॉस्पिटल फरीदाबाद के सहयोग से किया गया। रुमेटोलॉजी के निदेशक डॉ. पुनीत प्रूथी ने बीमारी के बारे में बताया और इसके निदान के लिए सुझाव सांझा किए। उन्होंने बताया कि हालांकि इस बीमारी को असामान्य बताया गया है लेकिन कई मरीज इससे पीड़ित हैं। वास्कुलिटिस बीमारियों का एक समूह है जिसे प्रमुख रूप से शामिल वाहिका के प्रकार के आधार पर वगीर्कृत किया जाता

है। चूंकि इसका निदान करना कठिन हैए मरीज अक्सर कई वर्षों तक पीड़ित रहते हैं। वास्कुलिटिस सोसाइटी ऐसी बीमारियों से पीड़ित लोगों की मदद करने के उद्देश्य से आई है और जागरूकता अभियान के माध्यम से उनकी तकलीफों को कम करने की कोशिश कर रही है।एशियन हॉस्पिटल के चेयरमैन एवं एमडी डॉ. पांडे ने बताया कि इस तरह का समाज समय की मांग है। यह सम्मेलन एशियन हॉस्पिटल में आयोजित हरियाणा का पहला सम्मेलन था। इस बीमारी से पीड़ित लोगों की मदद के लिए पंचकूला निवासी पूजा गोयल ने वास्कुलिटिस सोसायटी की स्थापना की है। इस सोसायटी में कई लोग शामिल हो गए हैं और दूसरों की मदद करने के लिए एक-दूसरे से बातचीत कर रहे हैं। हालांकि वास्कुलाइ-टिस एक ऑटो इम्यून बीमारी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि

इसका कोई इलाज नहीं है। किसी को निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रभावी उपचार उपलब्ध है। आप वेबसाइट के जरिए इस सोसायटी से जुड़ सकते हैं

तिगांव विधानसभा क्षेत्र में न होने पाए बिजली की किल्लत : राजेश नागर

फरीदाबाद। गर्मियों में बिजली की बढ़ी मांग को देखते हुए तिगांव क्षेत्र के विधायक राजेश नागर ने अपने निवास पर बिजली अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने अधिकारियों से स्पष्ट कहा कि वह सतर्क रहें और बिजली की किसी भी प्रकार की किल्लत लोगों को न आने दें। उन्होंने कहा कि अभी गर्मियां अपने उठाव काल पर हैं। फिलहाल इस हफ्ते भीषण गर्मी की आशंका देखी जा रही है। जिससे बिजली की मांग में उठाव आएगा और बिजली संसाधन पर

तिगांव के विधायक राजेश नागर ने बिजली अधिकारियों को बैठक में दिए कड़े निर्देश

लोड बढड़े पर दिक्कतें आएंगी। ऐसे में होने वाले फॉल्ट तुरंत प्रभाव से सही किए जाएं तभी लोगों को राहत मिलेगी। इसमें किसी प्रकार की कोई ढिलाई न दी जाए। श्री नागर ने कहा कि मुझे बताया गया है कि हमारे पास बिजली की भरपूर उपलब्धता है। बिजली सरप्लस है जिसका मतलब है कि हमारे पास सप्लाई से संबंधित समस्याएं ही आएंगी। जिसमें प्रमुख रूप से लोड के कारण होने वाले फॉल्ट ही प्रमुख हैं। अगर उन्हें समय पर ठीक कर दिया जाए तो कोई दिक्कत नहीं होगी लेकिन इसमें लापरवाही बरतने पर संबंधित व्यक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। इस अवसर पर तिगांव क्षेत्र के चारों बिजली एसडीओ जवाहर सांगवान, सुनील चावला, रजत कम्बोज और अंकित मित्तल प्रमुख रूप से मौजूद रहे। उन्होंने विधायक श्री नागर को विश्वास दिलाया कि बिजली की किसी भी प्रकार से दिक्कत नहीं आएगी। हमारे सभी कर्मचारी बिजली की बढ़ी मांग को देखते हुए पूरी तरह से सतर्क हैं और सभी फॉल्ट भी प्राथमिकता के आधार पर सही किए जा रहे हैं।

आर्थिक विकास के दृष्टि से वित्तीय वर्ष 2023-24 भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ

प्रहलाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर अन्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद में लगातार कम हो रही वृद्धि दर के बावजूद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि दर का होना यह दशार्ता है कि अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आ रही परेशानियों का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं के बराबर हो रहा है

हाल ही में वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए विकास से सम्बंधित आंकड़े जारी किये गए है। इसके अनुसार वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक एवं वैश्विक स्तर पर कार्यरत विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर का अनुमान लगाते हुए कहा था कि यह 7 प्रतिशत के आसपास रहेगी। परंतु, वित्तीय 2023-24 के दौरान भारत की आर्थिक विकास दर इन अनुमानों से कहीं अधिक रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में भी भारत की आर्थिक विकास दर 7.8 प्रतिशत रही है जो पिछले वित्तीय वर्ष की चौथी तिमाही में 6.1 प्रतिशत रही थी। पूरे विश्व में प्रथम 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक विकास दर भारत की आर्थिक विकास दर के कहीं आसपास भी नहीं रही है। अमेरिका की आर्थिक विकास दर 2.3 प्रतिशत, चीन की आर्थिक विकास दर 5.2 प्रतिशत, जर्मनी की आर्थिक विकास दर तो ऋणात्मक 0.3 प्रतिशत रही है। जापान की आर्थिक विकास दर 1.92 प्रतिशत, ब्रिटेन की 0.1 प्रतिशत, फ्रान्स की 0.9 प्रतिशत, ब्राजील की 2.91 प्रतिशत, इटली की 0.9 प्रतिशत एवं कनाडा की 1 प्रतिशत रही है, वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत रही है। 8 प्रतिशत से अधिक की विकास दर को देखते हुए अब तो ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2027 तक जर्मनी एवं जापान की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था निश्चित ही बन जाएगा।

विनिर्माण, खनन, भवन निर्माण एवं सेवा क्षेत्र, यह चार क्षेत्र ऐसे हैं जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद को तेजी से आगे बढ़ाने में अपना विशेष योगदान देते हुए नजर आ रहे हैं। यह स्पष्ट रूप से केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों के चलते ही सम्भव हो पा रहा है।

वास्तविक सकल मान अभिवृद्धि के आधार पर, वित्तीय वर्ष 2023-24 की चतुर्थ तिमाही में विनिर्माण के क्षेत्र में 8.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 की इसी अवधि में केवल 0.9 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की जा सकी थी। इसी प्रकार, खनन के क्षेत्र में भी इस वर्ष की चतुर्थ तिमाही में वृद्धि दर 4.3 प्रतिशत की रही है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 2.9 प्रतिशत की रही थी। भवन

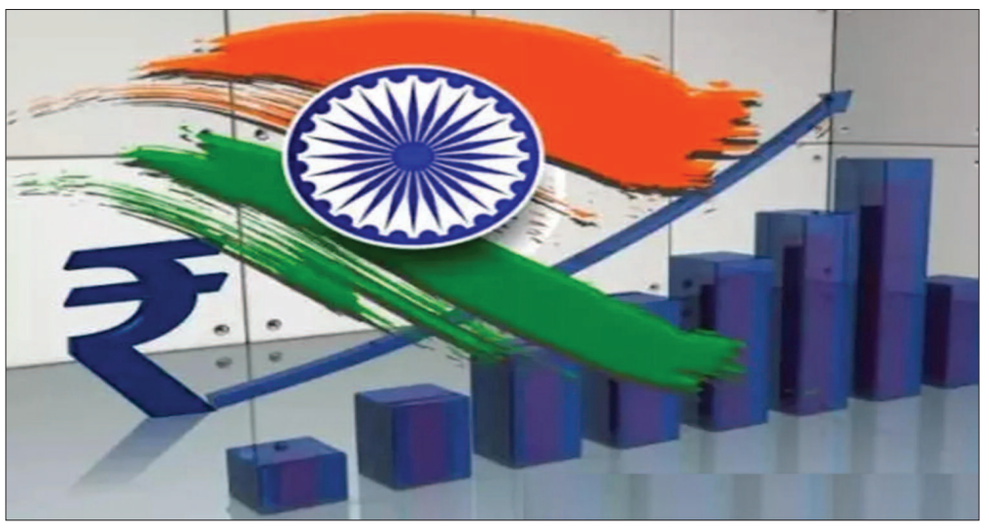

निर्माण के क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 7.4 प्रतिशत की रही थी। नागरिक प्रशासन, सुरक्षा एवं अन्य सेवाओं के क्षेत्र में वृद्धि दर 4.7 प्रतिशत से बढ़कर 7.8 प्रतिशत हो गई है। ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि दर पिछले वर्ष की चौथी तिमाही में 7.3 प्रतिशत से बढ़कर इस वर्ष चौथी तिमाही में 7.7 प्रतिशत पर पहुंच गई है। परंतु, कृषि, सेवा एवं वित्तीय क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में वृद्धि दर पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में कुछ कम रही है। वैश्विक स्तर पर अन्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद में लगातार कम हो रही वृद्धि दर के बावजूद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि दर का होना यह दशार्ता है कि अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आ रही परेशानियों का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं के बराबर हो रहा है एवं भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर तेज गति से आर्थिक वृद्धि करने में सफल हो रही है।

परंतु, भारत में कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जिन पर, आर्थिक विकास की गति को और अधिक तेज करने के उद्देश्य से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे, हाल ही के समय में भारत में निजी खपत नहीं बढ़ पा रही है और यह 4 प्रतिशत की दर पर ही टिकी हुई है। साथ ही, निजी क्षेत्र में पूंजी निवेश भी नहीं बढ़ पा रहा है। भारत में निजी खपत कुल सकल घरेलू उत्पाद का 60 प्रतिशत है। यदि सकल घरेलू उत्पाद के इतने बड़े हिस्से में वृद्धि नहीं होगी अथवा कम वृद्धि दर होगी तो देश में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर भी विपरीत रूप से प्रभावित होगी। भारत में निजी खपत इसलिए भी नहीं बढ़ पा रही है क्योंकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में घरेलू देयताएं सकल घरेलू उत्पाद के 5.7 प्रतिशत के उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गईं हैं एवं बचत की दर भी सकल घरेलू उत्पाद के 5.2 प्रतिशत पर अपने निचले स्तर पर आ गई है, जो 10 वर्ष पूर्व 7 प्रतिशत से अधिक थी। वहीं दूसरी ओर, दिसम्बर 2023 के प्रथम सप्ताह में भारत ने फ्रान्स एवं ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में पूरे विश्व में पांचवा स्थान हासिल कर लिया था। भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन, जापान एवं हांगकांग थे। परंतु, केवल दो माह से भी कम समय में भारत ने शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में हांगकांग को पीछे छोड़ते हुए विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है। भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक का हो गया है। अब ऐसा आभास होने लगा है कि भारत अर्थ के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत में नैशनल स्टॉक एक्स्चेंज पर लिस्टेड समस्त कम्पनियों के कुल बाजार पूंजीकरण का स्तर 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर जुलाई 2017 में पहुंचा था और लगभग 4 वर्ष पश्चात अर्थात मई 2021 में 3 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया था तथा केवल लगभग 2.5 वर्ष पश्चात अर्थात दिसम्बर 2023 में यह 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को भी पार कर गया था और अब यह 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर से भी आगे निकल गया है। इस प्रकार भारत शेयर बाजार पूंजीकरण के मामले में आज पूरे विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है।

प्रथम स्थान पर अमेरिकी शेयर बाजार है, जिसका पूंजीकरण 50.86 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। द्वितीय स्थान पर चीन का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 8.44 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। वर्ष 2023 में चीन के शेयर बाजार ने अपने निवेशकों को ऋणात्मक प्रतिफल दिए हैं। तीसरे स्थान पर जापान का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 6.36 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। चौथे स्थान पर भारत का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। पांचवे स्थान पर हांगकांग का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.29 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है। जिस तेज गति से भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण आगे बढ़ रहा है, अब ऐसी उम्मीद की जा रही है कि कुछ समय पश्चात ही भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण जापान शेयर बाजार के पूंजीकरण को पीछे छोड़ते हुए पूरे विश्व में तीसरे स्थान पर आ जाएगा।

उक्त सफलताओं के साथ ही, भारत ने अपने आर्थिक विकास की दर को तेज रखते हुए अपने राजकोषीय घाटे पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत का राजकोषीय घाटा 17 लाख 74 हजार करोड़ रुपए का रहा था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 16 लाख 54 हजार करोड़ रुपए का रह गया है। यह राजकोषीय घाटा वित्तीय वर्ष 2022-23 में 5.8 प्रतिशत था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 5.6 प्रतिशत रह गया है। भारत के राजकोषीय घाटे को वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5.1 प्रतिशत एवं वित्तीय वर्ष 2025-26 में 4.5 प्रतिशत तक नीचे लाने के प्रयास केंद्र सरकार द्वारा सफलता पूर्वक किए जा रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी जैसे विकसित देश भी अपने राजकोषीय घाटे को कम नहीं कर पा रहे हैं परंतु भारत ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान यह बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। सरकार का खर्च उसकी आय से अधिक होने पर इसे राजकोषीय घाटा कहा जाता है। केंद्र सरकार ने खर्च पर नियंत्रण किया है एवं अपनी आय के साधनों में अधिक वृद्धि की है। यह लम्बे समय में देश के आर्थिक स्वास्थ्य की दृष्टि से एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आया है।

संपादकीय

पानी पर दिल्ली को राहत

राजधानी दिल्ली में पानी की भारी किल्लत पर सर्वोच्च अदालत की टिप्पणी मायनेखेज है। शीर्ष अदालत ने इसी के मद् देनजर हिमाचल प्रदेश को 7 जून को दिल्ली के लिए 137 क्यूसेक अतिरिक्त जल छोड़ने का निर्देश दिया। साथ ही हरियाणा से कहा कि वह दिल्ली तक पानी का सुगम प्रवाह सुनिश्चित करे। दरअसल, दिल्ली में पानी की घनघोर किल्लत पिछले एक महीने से लगातार बनी हुई है। पानी को लेकर दिल्ली में हिंसक झड़प भी हुई। यहां तक कि एक शख्स की मौत भी हुई। दूसरी ओर, दिल्ली सरकार में मंत्री और आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता अतिशी ने पिछले हफ्ते हरियाणा और उत्तर प्रदेश सरकार को पत्र लिखकर अतिरिक्त पानी देने का अनुरोध किया था। हकीकी तौर पर दिल्ली में पानी को लेकर हमेशा से राजनीति होती रही है। इस बार भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। एक तरफ भाजपा ने जहां दिल्ली सरकार को पानी के मसले पर लगातार घेरा और पानी की कमी को लेकर केजरीवाल सरकार की नाक में दम किए रखी। वहीं आम आदमी पार्टी का कहना है कि इस बार चूंकि गर्मी का कहर ज्यादा रहा इसलिए राज्य में पानी की जोरदार कमी महसूस की गई, मगर हरियाणा और उत्तर प्रदेश ने मानवीय मूल्यों की परवाह नहीं की और दिल्ली की जनता को पानी के लिए तरसाया। खैर, सर्वोच्च अदालत को इस बात का इल्म है कि पानी पर यहां जमकर राजनीति हो रही है। यही वजह है कि उसने इस मामले में राजनीति न करने की सख्त हिदायत दी है। बहरहाल, पानी की बबार्दी किस तरह की जाती है इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है। अगर लोगों में यह समझ पैदा हो जाए कि पानी का समझदारी से इस्तेमाल और इसे बचाने में ही भलाई है तो ऐसी दुर्गति से बचा जा सकता है। यह शात सत्य है कि पानी को बचाया जा सकता है, मगर पानी बनाया नहीं जा सकता है। वैसे भी जल संकट दिल्ली की बड़ी और काफी दिनों की समस्या है। इससे निपटने का कोई युक्तसंगत उपाय हर हाल में तलाशना होगा। साथ ही अगर जो लोग पानी की बबार्दी करते पाए जाएंगे तो उन पर सख्ती भी की जानी चाहिए। पानी की जरूरत का अहसास तभी होता है जब यह नहीं मिलती है। इस बात को हमें समझना ही होगा।

चिंतन-मनन

सच्चे साधु की पहचान

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को दीक्षा देने के बाद कहा,तुम जहां भी जाओगे, वहां तुम्हें अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के लोग मिलेंगे। अच्छे लोग तुम्हारी बातें सुनेंगे और सहायता करेंगे। बुरे लोग तुम्हारी निंदा करेंगे और गालियां देंगे। तब तुम्हें कैसा लगेगा? एक गुणी शिष्य ने कहा,मैं किसी को बुरा नहीं समझता। कोई मेरी निंदा करेगा या मुझे गालियां देगा तो मैं समझूंगा कि वह भला व्यक्ति है क्योंकि उसने मुझे सिर्फ गालियां ही दीं, मुझ पर धूल तो नहीं फेंकी। बुद्ध ने पूछा,और यदि कोई तुम पर धूल फेंक दे तो? मैं उसे भला ही कहूंगा क्योंकि उसने धूल ही तो फेंकी, थप्पड़ तो नहीं मारा। और यदि कोई थप्पड़ मार दे तो क्या करोगे ?मैं उन्हें बुरा नहीं कहूंगा क्योंकि उन्होंने मुझे थप्पड़ ही मारा, डंडा तो नहीं मारा। और कोई डंडा मार दे तो? मैं उसे धन्यवाद दूंगा क्योंकि उसने मुझे केवल डंडे से ही मारा, हथियार से नहीं।लेकिन मार्ग में तुम्हें डाकू भी मिल सकते हैं जो तुम पर घातक हथियार से प्रहार कर सकते हैं।

तो क्या? मैं तो उन्हें दयालु ही समझूंगा, क्योंकि वे मारते ही हैं, मार नहीं डालते और यदि वे तुम्हें मार ही डालें तो? शिष्य बोला,इस जीवन और संसार में केवल दुख ही है। जितना अधिक जीवित रहूंगा उतना दुख देखना पड़ेगा। जीवन से मुक्ति के लिए आत्महत्या करना तो महापाप है। शिष्य के वचन सुनकर बुद्ध बोले-तुम धन्य हो। वास्तव में तुम सच्चे साधु हो। सच्चा साधु किसी भी दशा में दूसरे को बुरा नहीं समझता। जो दूसरों में बुराई नहीं देखता, वही सच्चा परिव्राजक होने के योग्य है। मुझे विश्वास है तुम सदैव धर्म के मार्ग पर चलोगे।

सत्ता बरकरार पर दावपेंच अहंकार की हुई हार !

संजय गोस्वामी

इस बार के लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्ष की चार सौ पार की मुराद पुरी नहीं हुई जिसे पाने के लिये हर तरह के चुनाव के दौरान प्रयोग किये गये दावपेंच आम जनता ने नकार दिया। चुनाव में लोकसभा की 543 सीट में सत्ता पक्ष एनडीए को 292 तो इंडिया गठबंधन को 234, अन्य के खाते में 17 सीट गई। चुनाव में इस बार भाजपा पहले के चुनाव से कम सीट 240 पाकर सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन तो गई पर सपष्ट बहुमत से दूर रहने के कारण अकेले सरकार गठित नहीं कर सकती जब कि वहीं कांग्रेस को पहले चुनाव से ज्यादा सीट मिली है। जो 99 है। पूर्व हुये लोकसभा चुनाव में भाजपा स्पष्ट बहुमत से ज्यादा सीट लाकर स्वयं के बलबुते पर केन्द्र में सरकार बनाने में सफल रही जबकि इस बार सत्ता की कुंजी इसके सहयोगी दल जदयू एवं टीडीपी के पास है। इनके सहयोग के बिना भाजपा केन्द्र में सरकार नहीं बना सकती। यदि किसी कारणवश ये सहयोगी दल भाजपा से अलग हो जाते है तो केन्द्र में भाजपा

को अपने दम पर सरकार बना पाना मुश्किल होगा। इस चुनाव में भाजपा को डबल इंजन की सरकार वाले राज्य उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा एवं बिहार से पूर्व में आई सीट से भी काफी कम सीट मिली है। स्वयं वाराणसी सीट से चुनावी मतगणना के शुरूवाती दौर से कई चरणों तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कांग्रेस प्रत्याशी अजय राय से पीछे चलते रहे, अंत में वे जीत तो हासिल कर लिये पर जीत का अंतराल पहले से काफी कम रहा। उनके मंत्रीमंडल के स्मृति इरानी, आर के सिंह सहित 19 मंत्री चुनाव हार गये। अमेठी से पूर्व चुनाव में राहुल गांधी को हराने के बाद स्मृति इरानी को आंतरिक अहंकार हो गया था जो इस चुनाव में कांग्रेस के एक साधारण कार्यकर्ता से हार का सामना करना पड़ा। जिससे इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कद पहले से कम हुआ है। इस चुनाव में प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित घर्मांडिया गठबंधन को देश की आवाम ने पहले से ज्यादा बहुमत दे दिया एवं सत्ता पक्ष भाजपा को बहुमत से दूर खड़ा कर दिया। कांग्रेस, पं. बंगाल से टीएमसी, एवं उत्तर प्रदेश से सपा का चुनाव में अच्छा प्रदर्शन रहा। इस चुनाव में एनडीए बहुमत का आकड़ा पार कर जीत हासिल कर तो ली, सत्ता बरकरार रह सकती है पर दावपेंच अहंकार की हार हुई है।

इस लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्ष चार सौ पार करने के चुनावी आकड़े को पाने के लिये हर तरह के चुनावी दावपेंच का खुलकर प्रयोग किया। विपक्ष को कमजोर करने के लिये जांच एजेंसियों का खुलकर कानून के नाम पर एकतरफा प्रयोग रहा। कई चरणों में लम्बे समय तक लोकसभा चुनाव संपन्न कराने की प्रक्रिया रही। भ्रष्टाचार के नाम पर अपने को सही एवं विपक्ष को गलत ठहराने की कार्यवही आदि को देश की आवाम ने नकार दिया। चुनाव को प्रभावित करने के लिये देश के धमार्चार्य चारों शंकराचार्यो के मना करने के वावजूद असमय राममंदिर का निर्माण कराया गया। अयोध्या से भाजपा प्रत्याशी की हार हुई। इस तरह के परिवेश ने मोदी के कद को कम कर दिया। फिर भी आज भी मोदी की गारंटी में अहंकार बोल रहा है। एक बार फिर से मोदी सरकार की बात उभर कर सामने आने लगी है। भाजपा का वजूद मोदी नाम में सिमट कर रह गया है। इस तरह का परिवेश सत्ता का एक नया रूप दे सकता है। इस बार कुछ को छोड़कर अधिकांश आ रहे एक्जीट पोल भी गलत साबित हुये भाजपा के पास सत्ता पर आने के लिये बहुमत का आकड़ा तो नहीं है पर एनडीए के पास वर्तमान में बहुमत का आकड़ा है। सत्ता का पाला फिलहाल एनडीए के पास है। विपक्ष इंडिया गठबंधन बहुमत से दूर है पर उसकी नजर एनडीए के सहयोगी दल की ओर भी टिकी हुई है। राजनीति में सबकुछ संभव है। ऐसे परिवेश में सत्ता का रंग बदल भी सकता है।

भविष्य के लिए नई उम्मीद

नरवीर यादव
कार्यकारी संपादक

.प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनावों में इस बार दक्षिणी राज्यों खासकर तमिलनाडु और केरल में काफी चुनाव प्रचार किया था। यही नहीं, चुनावों से पहले भी वह जिस तरह लगातार इन राज्यों का दौरा कर रहे थे उसके चलते भाजपा आलाकमान को विश्वास था कि इस बार दक्षिण में भी खूब कमल खिलेंगे। लेकिन ऐसा हो नहीं सका। हालांकि केरल में त्रिशूर सीट जीत कर भाजपा ने पहली बार अपना खाता खोल लिया लेकिन तमिलनाडु में वह इस बार भी खाली हाथ ही रही। तमिलनाडु में भाजपा का जो हश्र हुआ है उसके चलते अब पार्टी में अंदरूनी घमासान भी देखने को मिल रहा है। वैसे चुनावों के समय ही यह दिख रहा था कि वहां द्रमुक के नेतृत्व वाला गठबंधन ही सबसे आगे है लेकिन भाजपा के इतने बुरे हाल की कल्पना किसी ने नहीं की थी। तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष अन्नामलाई ने जब राज्यव्यापी यात्रा निकाली थी तो उनको भारी जन समर्थन मिला था। यही नहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुनावी रैलियों में भी खूब भीड़ उमड़ रही थी। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु में कई रोड़ शो भी किये जिसमें उमड़ा जनसैलाब भाजपा की उम्मीदों को लगातार बढ़ा रहा था। भाजपा ने इस बार चुनावों में अपने कई दिग्गजों को उतार दिया था और उन्होंने जिस मेहनत के साथ चुनाव प्रचार किया उससे लग रहा था कि भाजपा चार या पांच सीटों पर जीत सकती है। लेकिन परिणाम भाजपा के लिए बेहद निराशाजनक रहे। हम आपको बता दें कि एक लोकसभा सीट नागापट्टिनम में तो भाजपा चौथे स्थान पर जा पहुँची। साथ ही भाजपा जिन 23 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ी थी उसमें से उसने 11 पर अपनी जमानत गंवा दी। यही नहीं, भाजपा के सहयोगी दलों- आईजेके, पीएमके, तमिल मनीला कांग्रेस (टीएमसी) और एएमएमके ने भी दस सीटों पर जपनी जमानत गंवा दी। यह परिणाम दशार्ता है कि भाजपा और उसके गठबंधन दलों का सारा चुनाव प्रचार हवा-हवाई ही था, जमीन पर कुछ था ही नहीं। चुनाव परिणामों के बाद सवाल उठ रहा है कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अन्नामलाई का अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन तोड़ना और अकेले चुनाव लड़ने का फैसला कहीं गलत तो नहीं था? इस सवाल को लेकर प्रदेश भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि अन्नामलाई ने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को गुमराह किया। इन नेताओं का कहना है कि अगर अन्नाद्रमुक के साथ चुनाव लड़े होते तो स्थिति कुछ और होती। इन नेताओं का कहना है कि यदि अन्नाद्रमुक साथ होती तो तमिलनाडु में भाजपा का उभार होता तथा भाजपा के पास इस दक्षिणी राज्य से भी लोकसभा सीटें होतीं जिनकी आज बेहद जरूरत है। इन नेताओं का कहना है कि अन्नाद्रमुक से संबंध तोड़ने का फैसला हमारे लिये घातक सिद्ध हुआ है। भाजपा प्रदेश बौद्धिक प्रकोष्ठ के प्रमुख कल्याण रमन ने तो एक्स पर पोस्ट करके अन्नामलाई पर सीधा-सीधा आरोप भी लगा दिया है कि उन्होंने केंद्रीय नेतृत्व को सही बात नहीं बताई। उनका यह भी कहना है कि भाजपा ने चुनाव का संचालन भी ठीक से नहीं किया और पार्टी का वार रूम सिर्फ अन्नामलाई के इर्दगिर्द माहौल बनाने में लगा हुआ था। दूसरी ओर, अन्नामलाई की बात करें तो वह लोकसभा चुनाव परिणाम के बारे में यह तो मान रहे हैं कि भाजपा को उम्मीद के मुताबिक मत नहीं मिले लेकिन वह यह भी कह रहे हैं कि अन्नाद्रमुक को राज्य की जनता ने खारिज कर दिया है। उन्होंने 2026 में तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के दौरान भी अन्नाद्रमुक से किसी प्रकार के गठबंधन की संभावना को खारिज कर दिया है। वह कह रहे हैं कि हमसे जहां गलतियां हुईं उसकी समीक्षा की जायेगी और यह देखा जायेगा कि पार्टी को कैसे नये सिरे से खड़ा किया जा सकता है। वह अब भी इस बात के पक्षधर हैं कि भाजपा को राज्य में अपने बलबूते ही पैरों पर खड़ा होना चाहिए। हम आपको याद दिला दें

कि तमाम एग्जिट पोलों ने भविष्यवाणी की थी कि भाजपा राज्य में कम से कम 2-3 सीटें जीतकर तमिलनाडु के राजनीतिक परिदृश्य में प्रवेश करेगी। लेकिन चुनाव परिणामों ने दशार्या है कि द्रविड़ राजनीति वाले राज्य में लोकसभा सीट जीतने का भाजपा का इंतजार और लंबा हो गया है। भाजपा ने पूर्व आईपीएस अधिकारी अन्नामलाई के जरिये तमिलनाडु में अपना आधार बढ़ाने की जो रणनीति बनाई थी वह कामयाब नहीं हो पाई है। अन्नामलाई तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव हार गये थे और अब वह कोयम्बटूर से लोकसभा चुनाव भी हार गये हैं। हम आपको बता दें कि साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने राज्य भर में 23 उम्मीदवार उतारे थे। पार्टी ने 19 निर्वाचन क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे थे और शेष चार पर अपने सहयोगियों को कमल के निशान के तहत चुनाव लड़ाया था। लेकिन पार्टी एक भी सीट नहीं जीत पाई। हालाँकि, पार्टी ने 2019 के लोकसभा चुनावों में मिले वोट शेयर 3.38 प्रतिशत को इस बार बढ़ाकर 11.24 प्रतिशत कर लिया है जोकि कांग्रेस से बेहतर प्रदर्शन है। कांग्रेस का इस चुनाव में वोट प्रतिशत 10.67 रहा है। माना जा रहा है वोट शेयर में यह उल्लेखनीय वृद्धि 2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में भाजपा की मदद कर सकती है। इसके अलावा इस चुनाव की खास बात यह है कि 10 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा ने अन्नाद्रमुक को तीसरे स्थान पर धकेल दिया है और खुद उपविजेता बनकर उभरी है।

हम आपको यह भी याद दिला दें कि 2021 के तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा का अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन था। उस दौरान भाजपा को चार विधानसभा सीटों पर जीत हासिल हुई थी। भाजपा का 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान भी जयललिता के नेतृत्व वाले अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन था। उस दौरान 39 लोकसभा सीटों में से अन्नाद्रमुक को 37 और भाजपा तथा उसकी सहयोगी पीएमके को दो सीटें हासिल हुई थीं।

बहरहाल, अब देखना होगा कि जब भाजपा तमिलनाडु में पार्टी के प्रदर्शन की समीक्षा करेगी तो क्या अन्नामलाई के एकला चलो वाले फैसले के साथ खड़ी रहेगी या गठबंधन के जरिये राज्य में अपनी राजनीतिक यात्रा को आगे बढ़ायेगी।

नहर में नहाते समय 10 साल के बच्चे की डूबने से मौत, राहगीरों ने किशोर को बचाया

यमुनानगर । पश्चिमी यमुना नहर में हमीदा हेड के पास नहर में नहाते हुए आज दोपहर 10 साल का आजाद सिंह व 14 साल का का मोहित पानी में डूब गए। दोनों नहाने के लिए नहर पर पहुंचे थे। वहां से जा रहे राहगीरों ने नहर में कूद कर मोहित को तो बचा लिया लेकिन आजाद पानी में डूब गया। बाद में गोताखोरों ने उसकी नहर में तलाश की। दो घंटे बाद आजाद का शव पानी से मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आजाद के माता-पिता मूल रूप से सहारनपुर के पास मोदीपुर गांव के रहने वाले हैं। वह यमुनानगर में पुराना हमीदा की खड्डा कॉलोनी में किराये पर रहते हैं और दोनों प्लाईवुड फैक्टरी में काम करते हैं। खड्डा कॉलोनी निवासी 11 वर्षीय मोहित अपने पड़ोस में रहने वाले दोस्त 10 वर्षीय आजाद के साथ आज दोपहर को हमीदा हेड पर पहुंचा। यहां पर वह हेड से कुछ ही दूरी पर नहर में नहाने लगे। इसी दौरान नहाते हुए दोनों गहराई में चले गए। उन्हें डूबता देख वहां से जा रहे राहगीरों ने मोहित को बचा लिया। जब उसे बाहर निकाला गया तो वह बेहोश हो गया था। उसे तुरंत हमीदा चौकी पुलिस की पीसीआर में अस्पताल ले जाया गया जहां पर उसकी हालत ठीक है। परंतु आजाद पानी में डूब गया इसलिए उसे बचाया नहीं जा सका। पुलिस ने गोताखोरों को मौके पर बुलाया। दो घंटे बाद आजाद का शव निकाल लिया गया।

रोते बिलखते पहुंचे स्वजन

आजाद के नहर में डूबने का पता लगते ही उसके परिजन दौड़ पड़े। वह रोते बिलखते रहे। हमीदा चौकी इंचार्ज गुरदयाल भी पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए। गोताखोरों को बुलाया गया। गोताखोर राजीव अपनी टीम के साथ लगे रहे। काफी मशक्कत के बाद आजाद का शव मिला। वहीं परिजन बार-बार रोते हुए पुलिस से अपने बच्चे को बाहर निकालने की गुहार लगा रहे थे।

दुकान पर बेची जा रही थी डुप्लीकेट फेवीक्विक, कंपनी अधिकारियों व पुलिस ने दी दबिश, 400 पाउच बरामद

फतेहाबाद । फतेहाबाद के पुरानी सब्जीमंडी में पुलिस ने पीडिलाईट इन्डस्ट्रीज कम्पनी के अधिकारियों के साथ पुरानी सब्जी मंडी स्थित हर्ष इंटरप्राइजिज पर छापेमार कार्रवाई कर भारी मात्रा में नकली फेवीक्विक को बरामद किया है। पुलिस ने नकली फेवीक्विक बेचने वाले दुकानदार आरोपी को काबू कर लिया है। पकड़ गए आरोपी धर्मवीर निवासी जगजीवनपुरा के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस चौकी प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि शनिवार को कंपनी सेमिता लीगल कंपनी एल 244 सेक्टर 25 नोएडा उत्तर प्रदेश के मैनेजर दिल्ली निवासी राहुल चंदेलिया ने शिकायत दी कि पुरानी सब्जी मंडी फतेहाबाद मे दुकान हर्ष इंटरप्राइजिज का मालिक धर्मवीर निवासी जगजीवनपुरा पीडिलाईट इन्डस्ट्रीज कम्पनी के उत्पाद फेवीक्विक का नकली उत्पाद पहले से धड़ल्ले से आम जनता को बेचा जा रहा है और आम जनता व कम्पनी पीडिलाईट के साथ धोखाधड़ी की जा रही है। अगर छापेमार कार्रवाई की जाए तो भारी मात्रा में नकली उत्पाद फेवीक्विक बरामद हो सकती है। सूचना व शिकायत के आधार पर टीम गठित कर कार्रवाई की गई तो उक्त दूकान मे पीडिलाईट इन्डस्ट्रीज कम्पनी के नकली उत्पाद फेवीक्विक के 400 पीस बरामद हुए। असली और मौके से बरामद फेवीक्विक का मिलान किया गया तो वह भिन्न मिली। दुकानदार से जब बिल मांगे गए तो वह नहीं दिखा पाया। आरोपी के खिलाफ थाना शहर फतेहाबाद में कॉपीराइट एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

बहन के घर जा रहे बाइक सवार भाई को ट्रक ने मारी टक्कर, मौके मौत ; मृतक की छह महीने पहले हुई थी शादी

झज्जर। बहन के घर जा रहे भाई की नौगांव मातनहेल मार्ग पर रविवार सुबह लगभग सात बजे ट्रक की टक्कर लगने से मौत हो गई। मृतक के भाई की शिकायत पर पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। चालक ट्रक को छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने सूचना मिलने पर घटनास्थल का मौका मुआयना किया और एफएसएल टीम को भी घटनास्थल पर बुलाया गया। एफएसएल टीम ने घटना स्थल से जरूरी साक्षी एकत्रित किए हैं। स्थानीय पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल झज्जर भिजवाया। जहां शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया गया। मृतक की शादी 6 महीने पहले ही हुई थी। वह अपने पीछे तीन बहन व एक भाई को छोड़ गए हैं। पुलिस को दी गई शिकायत में रविन्द्र पुत्र रामकुमार निवासी सासरोली ने बताया कि वह और उसका सबसे छोटा भाई प्रशांत रविवार अलसुबह अपने किसी काम से हमारी बहन कविता के पास अलग-अलग मोटरसाईकिल लेकर अपने गांव सासरोली से अपनी बहन के पास मातनहेल जा रहे थे। उसका भाई प्रशांत मोटरसाईकिल पर चल रहा था। जब वह गाव नौगांवा से रुडियावास के बीच मातनहेल झाडली रोड पर पातुवास माईनर के पास पहुंचे तो एक ट्रक चालक मातनहेल की तरफ से तेज रफतार से ट्रक चलाता हुआ आया और उसके भाई प्रशांत की बाइक को सीधी टक्कर मार दी। इससे उसका भाई रोड पर जा गिरा। जब उसने अपनी मोटरसाईकिल को साईड में खड़ा करके अपने भाई के पास जाकर देखा तो उसके भाई प्रशांत की ट्रक द्वारा टक्कर लगने के कारण मौके पर ही मौत हो चुकी थी और ट्रक ड्राइवर ट्रक को मौके पर ही छोड़कर भाग गया।

अधिकारी के अनुसार-

मृतक प्रशांत का पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया है। चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। जल्द ही आरोपी का पता लगाकर गिरफ्तार कर लिया जाएगा। -कुलदीप सिंह, एएसआई मातनहेल।

जान से मारने की नीयत से व्यक्ति पर चलाई गोली, बुरे गांव में कार सवार युवक ने दिया वारदात को अंजाम

हिसार । हिसार के बुरे गांव में रविवार अलसुबह 3.15 मिनट पर गाड़ी में सवार एक युवक ने रमन शर्मा पर जान से मारने की नीयत से गोली चलाई। गोली सीधे दरवाजे पर लगी। एक हवाई फायर किया। वारदात को अंजाम देने के बदमाश मौके से फरार हो गया। सूचना मिलने पर आजाद नगर थाना पुलिस घटना स्थल पर पहुंची। पुलिस ने रमन शर्मा की शिकायत पर अज्ञात के खिलाफ हत्या प्रयास और शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज कर जांच आरंभ कर दी है। पुलिस को दी गई शिकायत में रमन शर्मा कहना है कि वह खेतीबाड़ी का काम करता है। शनिवार को परिवार के साथ घर पर सो रहा था। अलसुबह 3.15 मिनट पर घर के बाहर आवाज सुनाई दी। आवाज सुनकर घर से बाहर निकला तो एक काले रंग की गाड़ी खड़ी थी। गाड़ी से एक युवक नीचे उतरा और उसने पिस्तौल से हवाई फायर किया। उसके बाद उसने जान से मारने की नीयत से मेरी तरफ फायर किया। गोली सीधे दरवाजे पर आकर लगी। गोली चलाने के बाद युवक गाड़ी में बैठक मौके से फरार हो गया।

हरियाणा के सीएम की बड़ी घोषणा: गरीब परिवारों को मिलेंगे 100-100 गज के प्लॉट, 20 हजार लाभार्थियों को होगा फायदा

चंडीगढ़। हरियाणा के सीएम नायब सैनी ने कहा कि हरियाणा में जो गरीब परिवार हैं। जिन्हें 100 गज के प्लाट देने की बात कही गई थी। लेकिन उन्हें जगह की पोजेशन नहीं मिली थी न रजिस्ट्री मिली थी। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने एक योजना बनाई थी जिसके तहत कल प्रदेश में कई जगह लाभार्थियों को प्लॉट्स की पोजेशन दी जाएगी। मैं सोनीपत में रहुंगा। मौके पर ही लोगो को रजिस्ट्री दी जाएगी।

हरियाणा में ऐसे 20 हजार लाभार्थी हैं। जिन्हें प्लॉट मिलना है। ये योजना कांग्रेस ने शुरू तो की लेकिन उसे अधूरा छोड़ दिया। लोगों के पास कोई कागज तक नहीं था। लोग इधर-उधर भटकटे रहे है। हम उसे पूरा कर रहे हैं। कहा कि मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत लाभार्थियों को प्लॉट्स का कब्जा और रजिस्ट्री दी जाएगी। कल 7775 लोगों को प्लॉट और रजिस्ट्री दी जाएगी। बाकी लोगो को भी जल्दवइस योजना का लाभ दिया जाएगा। बाकी लोग भी पॉर्टल के माध्यम से अप्लाई कर सकते हैं।

सीएम ने बताया कि प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 14939 मकान बनाकर दिए। 15356 मकान निर्माणाधीन हैं। जिनपर काम चल रहा है। हमने 552 करोड़ रुपए इस योजना पर खर्च किया है। 2138 पुराने मकानों का नवीनीकरण किया। इसके लिए लोगों को 60-60 हजार रुपए पहुंचाए हैं।

रोहतक लोकसभा सीट पर हार का असर: झज्जर में बीजेपी की बैठक में जमकर हंगामा, नेताओं के खिलाफ कार्यकर्ताओं में गुस्सा

झज्जर। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद पहली बार पूर्व सांसद एवं भाजपा प्रत्याशी डॉ. अरविंद शर्मा कार्यकर्ताओं से मिलने पहुंचे। बैठक के दौरान एक-एक करके कई कार्यकर्ताओं ने मंच से जमकर भड़ास निकाली। अधिकतर कार्यकर्ताओं ने पूर्व सांसद एवं रोहतक लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी डॉ. अरविंद शर्मा की हार का जिम्मेदार वरिष्ठ नेताओं और खास तौर पर मंडल अध्यक्षों पर फोड़ने का काम किया।

इस दौरान आरोप लगाने पर बैठक में जमकर हंगामा हुआ और कार्यकर्ताओं के बीच बहस हुई। अन्य कार्यकर्ताओं ने दूसरे कार्यकर्ताओं को समझाने का प्रयास किया। कार्यकर्ताओं ने स्पष्ट आरोप लगाए कि हार का जिम्मेदार वरिष्ठ नेता और मंडल अध्यक्ष है। उन्होंने चुनाव के दौरान गांवों में प्रचार के लिए वरिष्ठ नेता और मंडल अध्यक्षों को फोन किए, लेकिन उसके बावजूद कोई प्रचार के लिए नहीं आया। इससे लोगों में नाराजगी बढ़ी है और इसका खामियाजा हार का सामना करके देखना पड़ा।

कार्यकर्ताओं ने कहा कि पार्टी के नेता आपके साथ फोटो खींचवाने के लिए कुर्सियों पर बैठ जाते हैं, उनको नीचे उतारा जाए। कार्यकर्ताओं ने बूथ पर तैनात पोलिंग पार्टियों पर भी दूसरी पार्टी का पक्ष लेने के आरोप लगाए। साथ ही कहा कि पोलिंग पार्टियों के रूप में तैनान कर्मचारियों ने मृत लोगों के बोगस वोट तक डलवाने का काम किया। कार्यकर्ताओं के बीच बहस बढ़ती देखकर पूर्व सांसद ने खुद ही मोर्चा संभाला और मंच से कार्यकर्ताओं को शांत रहने का आह्वान किया।

पूर्व सांसद ने सरकार के नेतृत्व पर उठाए सवाल, बोले अधिकारियों पर लगाम नहीं

बैठक में पूर्व सांसद डॉ. अरविंद शर्मा ने सरकार के नेतृत्व पर ही सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि सरकार के नेतृत्व का अधिकारियों पर कोई लगाम नहीं है। वह उनकी बात तक नहीं मानते। उन्होंने यह भी कहा कि कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ की हड्डी है। अधिकारी पार्टी के कार्यकर्ताओं को ही नहीं पूछते। उनके काम तक नहीं होते। यदि कार्यकर्ताओं के काम नहीं होंगे तो अगले चुनाव में इससे भी बुरा हाल होगा। उन्होंने यहां तक कहा कि कई बार तो अधिकारियों को कार्यकर्ताओं के ना करने वाले काम भी कर देने चाहिए।

चुनाव नतीजों के बाद जजपा ने की सभी इकाइयां भंग, बड़े बदलावों के साथ होगी नए पदाधिकारियों की घोषणा

चंडीगढ़। लोकसभा चुनाव में बुरी तरह हारने के बाद जननायक जनता पार्टी (जजपा) ने शनिवार को अपनी सभी प्रमुख इकाइयों को भंग कर दिया है। जजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजय सिंह चौटाला ने यह फैसला पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं से विचार-विमर्श करने के बाद लिया है। जजपा ने तुरंत प्रभाव से राष्ट्रीय कार्यकारिणी, प्रदेश कार्यकारिणी, सभी जिला व हलका स्तरीय कार्यकारिणी को भंग किया है। हरियाणा के अलावा अन्य प्रदेशों की कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को भी पदमुक्त कर दिया गया है। अब जजपा जल्द नए पदाधिकारियों की घोषणा करेगी।

जजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजय सिंह चौटाला ने कहा कि पार्टी अपने संगठन में बदलाव करके नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि संगठन पुनर्गठन के तहत मेहनती, ऊर्जावान नेताओं व कार्यकर्ताओं को अहम जिम्मेदारी दी जाएगी। जजपा अपने वरिष्ठ नेताओं से विचार-विमर्श करके संगठन के नए स्वरूप पर काम करेगी। उन्होंने सभी जेजेपी कार्यकर्ताओं से आगामी घोषणा तक अपने-अपने क्षेत्र में जिम्मेदारी से काम करते रहने को कहा।

उल्लेखनीय है कि जजपा का लोकसभा चुनाव में बहुत ही निराशाजनक प्रदर्शन रहा है। जजपा के सभी दसों उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। चुनाव में जजपा को 0.87 फीसदी वोट मिला है। वहीं, सत्ता से अलग होने के बाद जजपा के नेताओं का टूटना जारी है। अब तक पार्टी के कई नेता इस्तीफा दे चुके हैं। शनिवार को सोनीपत में जजपा के भूपेंद्र मलिक और पवन खरखोदा ने भी पार्टी से इस्तीफा दे दिया।

हरियाणा बाल संरक्षण आयोग के सदस्य ने बाल संरक्षण से जुड़े सभी एनजीओ के पदाधिकारियों की ली बैठक

-जिला में बाल मजदूरी को रोकने के लिए करें हर संभव प्रयास, बाल मजदूरी करवाने वालों के खिलाफ करें सख्त कार्यवाही-सदस्य गणेश

सोनीपत। हरियाणा बाल संरक्षण आयोग के सदस्य गणेश की अध्यक्षता में बाल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे जिले के सभी स्टेकहोल्डर्स सदस्यों की बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान उन्होंने लेबर कमिश्नर से बाल मजदूरी के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उन्हें निर्देश दिए कि सोनीपत में कहीं भी बाल मजदूरी नहीं होनी चाहिए इसको रोकने के लिए सभी संबंधित अधिकारी ढ़ाबों, औद्योगिक व अन्य मजदूरी से संबंधित क्षेत्रों में रेड करते रहें। उन्होनें लोगों को आह्वान किया कि अगर आपको कहीं भी कोई बच्चा मजदूरी करता दिखाई देता है तो तुरंत इसकी जानकारी लेबर कमिश्नर या जिला बाल सरंक्षण अधिकारी को दें ताकि तुरंत बाल मजदूरी करवाने वाले व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही की जा सके। बैठक में हरियाणा बाल संरक्षण आयोग के सदस्य ने जिला में बाल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे एनजीओं के कार्यो की सराहना करते हुए कहा कि ये सभी संस्थाएं बाल संरक्षण के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है और मुझे पूरी उम्मीद है कि ये आगे भी ऐसे ही कार्य करते रहें ताकि बच्चों के अधिकारों का कहीं भी हनन न हो। उन्होंने एएलसी को निर्देश दिए गए कि वे डीटीएफ के द्वारा

प्रत्येक माह बैठक आयोजित करवाएं तथा चाइल्ड फेंडली व्हाट्सएप ग्रुप बनाएं। इसके अलावा डीटीएफ के सदस्यों की संख्या बढ़ाई जाए।

श्री गणेश ने बाल विवाह संबंधित केसों के लिए को पीपीओ को निर्देश दिए कि वे बाल विवाह से संबंधित सभी केसों को सीडब्ल्यूसी के सामने पेश करें ताकि इनका निपटारा हो सके और संबंधित के खिलाफ कार्यवाही की जा सके। इसके साथ ही उन्होंने डीपीओ प्रवीण कुमारी को निर्देश दिए कि वे जिला में चल रहे सभी प्ले स्कूलों की सूची मुख्यालय को भेजे। अगर जिला में कोई बिना मान्यता के प्ले स्कूल चला रहा है तो उसके खिलाफ तुरंत कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि एकल अभिभावक, बेसहारा व किसी बच्चे के मात-पिता को जानलेवा बिमारी होने के कारण आर्थिक सहायता की जरूरत है तो उनके प्रार्थना पत्र जिला बाल संरक्षण कार्यालय में पहुंचाएं।

इस मौके पर महिला एवं बाल विकास विभाग की पीओ प्रवीण कुमारी, जिला बाल संरक्षण अधिकारी रितु गिल व कार्यालय का स्टॉफ आदि के अलावा बाल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे एनजीओ के पदाधिकारी मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में खंड स्तर पर योग प्रशिक्षण शिविर होंगे आयोजित : उपायुक्त अजय कुमार

रोहतक। उपायुक्त अजय कुमार ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों के तहत आयुष विभाग द्वारा 10 से 12 जून तक विभिन्न विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों को खंड स्तर पर योग प्रशिक्षण दिया जायेगा। खंड स्तरीय योग प्रशिक्षण के लिए स्थल निर्धारित किये गए है तथा योगा प्रशिक्षण भी तैनात किये गए है। यह प्रशिक्षण शिविर सुबह 6 बजे से 7:30 बजे तक आयोजित होंगे। अजय कुमार ने बताया कि रोहतक खंड के लिए 10 से 12 जून तक स्थानीय राजीव गांधी खेल परिसर के हॉकी ग्राउंड, कलानौर खंड के लिए कलानौर स्थित राजकीय आईटीआई ग्राउंड, सांपला खंड के लिए सांपला स्थित सर छोटूराम राजकीय महिला महाविद्यालय, लाखनमाजरा खंड के लिए लाखनमाजरा स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा महम खंड के लिए महम स्थित हुडा पार्क में योग प्रशिक्षण दिया जायेगा। जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. ईशा ने बताया कि रोहतक खंड के लिए सुंडाना के एएमओ डॉ. प्रदीप चाहर, कलानौर खंड के लिए कलानौर सीएचसी के एचएमओ डॉ. ऋषभ, सांपला खंड के लिए हसनगढ़ के एएमओ डॉ. जय भगवान, लाखनमाजरा खंड के लिए चिड़ी सीएचसी के एचएमओ डॉ. कपिल गुप्ता तथा महम खंड के लिए फरमाना के एएमओ डॉ. नवीन को प्रभारी नियुक्त किया गया है।

महावीर पुरस्कार के लिए 30 जुलाई तक कर सकते हैं आवेदन-डॉ. मनोज कुमार

सोनीपत, रीयल संवाद (नीलम)।

-पुरस्कार विजेता को मिलेगा 10 लाख रुपए व प्रशस्ति पत्र

उपायुक्त डॉ. मनोज कुमार ने बताया कि भगवान महावीर फाऊंडेशन की ओर से अहिंसा और शाकाहार, शिक्षा, दवा व समुदाय और सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में समाज के लिए निस्वार्थ सेवा करने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं के लिए 28वें महावीर पुरस्कार के लिए सिफारिशें मांगी गई हैं। इसमें प्रत्येक क्षेत्र में 10 लाख रुपये, एक प्रशस्ति पत्र व एक स्मृति चिन्ह दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि 30 जुलाई तक विचार के लिए अनुशंसित व्यक्तियों व संस्थाओं के नाम व पते nominations. bmfawards @gmail.com पर भेजे जा सकते हैं।

उपायुक्त ने बताया कि भगवान महावीर फाउंडेशन की स्थापना 1994 में चेन्नई में हुई थी। फाउंडेशन का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं की पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित करना और सम्मानित करना है जो समाज को निस्वार्थ सेवा प्रदान कर रहे हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने बताया कि भगवान महावीर फाऊंडेशन की ओर से हर वर्ष चार क्षेत्रों अहिंसा और शाकाहार, शिक्षा, दवा व सामुदायिक और सामाजिक सेवा प्रत्येक क्षेत्र में 10 लाख रुपए, एक प्रशस्ति पत्र और एक स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है।

उन्होंने बताया कि पुरस्कार विजेताओं का चयन भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एमएन वेंकटचलैया की अध्यक्षता वाली जूरी द्वारा किया जाता है। पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति, भारत के उपराष्ट्रपति, राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों व मंत्रियों जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा औपचारिक समारोहों में प्रदान किए जाते हैं

नामांकन कैसे करें

उपायुक्त डॉ0 मनोज कुमार ने बताया कि कोई व्यक्ति व संस्था आवेदन कर सकती है या किसी व्यक्ति द्वारा प्रायोजित की जा सकती है। नामांकित/प्रायोजक भरा हुआ नामांकन nominations.bmfawards@gmail.com मेल व वेबसाइट www.bmfawards.org में दिए गए लिंक के माध्यम से 30 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन के लिए गाइडलाइन

स्व-नामांकन स्वीकार किए जाते हैं। नामांकन प्रपत्र में तथ्यात्मक जानकारी दी जानी चाहिए। गलत जानकारी के परिणामस्वरूप आवेदन अस्वीकार किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में नामांकित व्यक्ति द्वारा की गई गतिविधियों की प्रकृति और प्रदान की गई सेवाओं के क्षेत्र पर एक संक्षिप्त नोट आपकी अनुशंसा के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। नामांकित व्यक्ति को कम से कम 10 वर्षों से आवेदन किए गए क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करनी चाहिए। संलग्नकों की केवल एक फोटो कॉपी ही भेजी जानी चाहिए। मूल प्रतियां नहीं भेजी जानी चाहिए। नामांकन के समर्थन में हमें भेजी गई सामग्री को वापस करना हमारे लिए संभव नहीं होगा। समग्र प्रभाव और लोगों को इससे होने वाले विशिष्ट लाभों को ध्यान में रखा जाएगा। विशेष रूप से किस तरह और किस हद तक किए गए कार्य ने समाज के कमजोर वर्गों की मदद की है इस पर विचार किया जाएगा। कोई भी कॉलम खाली न छोड़ें। जहां भी आवश्यक हो वहां अतिरिक्त शीट का उपयोग करें। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन किसी भी वर्ष में किसी भी या सभी श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान करने को स्थगित या रोक सकता है। यदि फाउंडेशन की राय में कोई भी नामांकित व्यक्ति पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उपयुक्त नहीं पाया जाता है। महावीर पुरस्कार के चयन जूरी का निर्णय अंतिम होगा

अहिंसा और शाकाहार

अहिंसा और शाकाहार का प्रचार, प्रसार और अभ्यास। पशुओं और पक्षियों की सुरक्षा और देखभाल। विशिष्ट उदाहरण जब हिंसा को टाला गया और अहिंसक तरीकों से समाधान और समझौते किए गए।

सामुदायिक एवं सामाजिक सेवा

पेयजल की आपूर्ति, जागरूकता पैदा करना और स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करना, ज्ञान का प्रसार करना और संतुलित आहार प्रदान करना। गांव की सडक़ों, परिवहन और संचार प्रणालियों में सुधार। कमजोर बच्चों का पुनर्वास। संकटग्रस्त महिलाओं को मुफ्त या कम लागत वाली कानूनी सहायता, महिलाओं में सामान्य जागरूकता पैदा करना, उनकी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने के लिए सुधार। महिलाओं के लिए आय सृजन गतिविधियां। वयस्क शिक्षा और अधिकारों, कानून आदि के बारे में जागरूकता पैदा करना। महिलाओं और कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण। कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों, शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों, वयस्क निराश्रित आदि का पुनर्वास। लोगों को स्वयं सहायता और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करना। प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल विकास। लोगों के जीवन स्तर में सुधार, वकालत आदि। लघु सिंचाई और सामुदायिक पेयजल स्रोत के लिए तालाबों जैसी जल संचयन संरचनाएं स्थापित करना।

शिक्षा

ऐसे विचार, कार्य जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाते हैं, शिक्षण और नई तकनीकों का उपयोग करके समझ और ज्ञान के हस्तांतरण में सुधार करते हैं। दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को शिक्षित करने के प्रयास। शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण या शिक्षा की कोई वैकल्पिक प्रणाली, विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा आदि शामिल हो सकते हैं। मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग और डिस्लेक्सिक बच्चों आदि की शिक्षा और पुनर्वास। विज्ञान की सुविधा और अनुप्रयोग और ग्रामीण, आदिवासी और हाशिए के वर्गों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाना।

चिकित्सा

अल्पसुविधा प्राप्त क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा और सामान्य कल्याण प्रदान करना। स्वास्थ्य और स्वच्छता तथा सफाई के बारे में जागरूकता फैलाना। बेहतर स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे का निर्माण करना। महिलाओं और बच्चों के लिए निशुल्क या कम लागत वाली चिकित्सा देखभाल सुविधाएं, प्रसव पूर्व और प्रसव पश्चात देखभाल, बच्चों के लिए बेहतर स्वास्थ्य, स्वच्छता और बेहतर पोषण के लिए शिक्षा। गरीबों के कल्याण के लिए चिकित्सा संस्थानों की स्थापना में शामिल व्यक्ति। गुणवत्ता और प्रभावकारिता और लागत प्रभावी उपचार को बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान।

गाजा में फिर कत्ल-ए-आम, इजरायल ने 210 को मार डाला, कई घायल

गाजा। इजरायल और हमास के बीच युद्द लंबे समय से चल रहा है। दोनों देश आए दिन एक दूसरे पर गोलियां की बारिश करते रहते हैं। अब हाल ही में इजरायल ने गाजा से चार बंधकों को बचा लिया। लेकिन इजरायली सेना ने 210 लोगों की जान ले ली और हमले के दौरान 400 लोग घायल हो गए हैं। हमास के रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान ये बात सामने आई है। पुलिस के एक बयान में कहा गया कि ऑपरेशन के दौरान एक इजरायली बल कमांडर मारा गया। गजान के पैरामेडिक्स और निवासियों ने कहा कि हमले में कई लोग मारे गए। बाजार और मस्जिद के आसपास पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के क्षत-विक्षत शव बिखरे पड़े थे। इजरायल ने बचाए गए बंधकों का नाम नोआ अर्गामानी, 26, अल्मोग मीर जान, 22, एंड्री कोजलोव, 27 और श्लोमी जिव, 41 बताया है। इजरायली सेना ने कहा कि उन्हें मेडिकल चेकअप के लिए अस्पताल ले जाया गया और अब उनका स्वास्थ्य ठीक है। बता दें कि फलस्तीन संगठन हमास ने इन सभी का हमले के दौरान 7अक्टूबर में नोवा संगीत समारोह से अपहरण कर लिया गया था। रेस्क्यू ऑपरेशन और उसके साथ तेज हवाई हमला मध्य गाजा के अल-नुसीरत में हुआ, जो एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है और अक्सर इजरायल और हमास के बीच संघर्ष का क्षेत्र बना रहता है। एक इजरायली सैन्य प्रवक्ता रियर एडमिरल डैनियल हैगर ने कहा कि यह ऑपरेशन नुसीरात में एक आवासीय पड़ोस के मध्य में हुआ जहां हमास ने बंधकों को दो अलग-अलग अपार्टमेंट ब्लॉकों में रखा था। हमले के दौरान इजरायली सेना पर भीषण गोलीबारी हुई और उन्होंने आसमान से गोलीबारी करके जवाब दिया।45 साल के नुसीरत के निवासी जियाद ने भी इस घटना को लेकर जानकारी दी है। उन्होंने एक मैसेजिंग ऐप के जरिए रॉयटर्स को बताया कि बमबारी एक स्थानीय बाजार और अल-अवदा मस्जिद पर केंद्रित थी। उन्होंने कहा, चार लोगों को छुड़ाने के लिए इजराइल ने दर्जनों निर्दोष नागरिकों को मार डाला। आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों ने मृतकों और घायलों को पास के शहर दीर ??अल-बलाह में अस्पताल पहुंचाने की कोशिश की, लेकिन कई शव अभी भी सड़कों पर पड़े हुए थे।

हंगरी में यूरोपीय संसद के चुनावों से पहले रिस्पैक्ट एंड फ्रीडम पार्टी के पीटर मेगयार के समर्थकों ने एक रैली निकाली।

जापान में घटती जन्मदर बनी चुनौती, बच्चे पैदा नहीं कर रहे लोग

टोक्यो। भारत-चीन जैसे देशों में आबादी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। भारत में तो बढ़ी आबादी को लेकर कानून बनाने की बात भी कही जा रही है। वहीं जापान में घटती जन्मदर एक चुनौती बन गई है। जापान में लोग बच्चे पैदा नहीं कर रहे हैं जिसकी वजह से जापान जनसांख्यिकीय चुनौती का सामना कर रहा है। जन्म दर में आई गिरावट को कम करने के लिए जापान सरकार लगातार प्रयार कर रही है। इसमें राज्य समर्थित डेटिंग ऐप का रोलआउट भी शामिल है। कम बच्चे पैदा होने का सबसे बड़ा कारण लोगों का शादी ना करना है। जापान में शादी करने वालों की संख्या में भी गिरावट आ रही हैं, वहीं तलाक के मामले बढ़ रहे है। ये प्रवृत्ति देश में जनसांख्यिकीय असंतुलन पैदा कर रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, जापान की प्रजनन दर बीते कई सालों से गिर रही है। अब ये निचले स्तर पर पहुंच गई है। जापान के स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय के जारी नए आंकड़ों के मुताबिक करीब 12 करोड़ की आबादी वाले देश में पिछले साल केवल 7,27,277 बच्चे पैदा हुए। मंत्रालय के मुताबिक बीते साल देश में प्रजनन दर 1.26 से घटकर 1.20 रह गई है। प्रजनन दर को एक महिला के जीवनकाल में जन्मे बच्चों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। किसी जनसंख्या को स्थिर रहने के लिए 2.1 की प्रजनन दर की जरुरत होती है। इससे ऊपर प्रजनन दर होने पर जनसंख्या बढ़ती है। जापान में जनसंख्या का संतुलन बना रहे इसके लिए जापान की सरकार ने युवाओं को शादी करने और परिवार बढ़ाने के प्रयासों को तेज कर दिया है। सरकार ने इसके लिए डेटिंग ऐप लॉन्च किया है।

पहली बार किसी सार्वेजानिक कार्यक्रम में दिखाई दी पुतिन की दोनों बेटियां

सेंट पीटर्सबर्ग। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की दुनिया काफी रहस्यमयी है। पुतिन से भी ज्यादा रहस्यमयी उनका परिवार है। आमतौर पर उनका परिवार कभी नजर नहीं आता। लेकिन हाल ही में उनकी दोनों बेटियां सेंट पीटर्सबर्ग में आयोजित एक प्रमुख आर्थिक फोरम में दिखाई दी। पुतिन की बेटियों का दिखाना बेहद दुर्लभ पल बताया जा रहा है। क्योंकि आमतौर पर पुतिन अपनी बेटियों को किसी और चीज में सक्रिय करते दिखाई नहीं देते है। इसलिए जब लोगों ने उन्हें देखा तब चौंक गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक पुतिन अपने पारिवारिक जीवन के बारे में कभी कोई जानकारी नहीं देते। लेकिन 39 साल की मारिया वोरोन्त्सोवा और 37 साल की कतेरीना तिखोनोवा को उनकी बेटी माना जाता है। हालांकि, कभी खुद पुतिन ने उनके बारे में कभी पुष्टि नहीं की। न ही कभी उनके साथ कोई फोटो खिंचवाते हैं। एक भी तस्वीर उनके साथ नहीं मिलेगी। 2022 में अमेरिका ने इन दोनों को पुतिन की बेटी बताकर प्रतिबंधित किया था। तिखोनोवा रूसी सेना के लिए काम करती हैं और उन्हें आईटी के बारे में सपोर्ट करती हैं। वे रूस की तकनीकी पैनल में अहम पद पर हैं। वीडियो लिंक के माध्यम से दिए गए भाषण में तिखोनोवा ने कहा, देश की संप्रभुता हाल के वर्षों में एक प्रमुख विषय रही है। यह रूस की सुरक्षा का आधार भी है। पुतिन की दूसरी बेटी वोरोन्त्सोवा भी इसमें शामिल हुईं। बॉयोलॉजी रिसर्चर वोरोन्त्सोवा एक सरकारी जेनेटिक इंस्टीट्यूट का नेतृत्व करती हैं। उन्होंने जैव विविधता में नए प्रयोगों के बारे में बात की। कहा जा रहा है कि यह पहला मौका है, जब दोनों एक साथ आईं, और कई महत्वपूर्ण मसलों पर अधिकारियों को सलाह दी। बताते हैं कि पुतिन की पूर्व पत्नी ल्यूडमिला ने 1985 और 1986 में मारिया और कैटरीना नामक दो बच्चों को जन्म दिया, जबकि वे दोनों विवाहित थे। 2000 की शुरुआत क्रेमलिन ने पुतिन की छुट्टियों के दौरान की एक तस्वीर प्रकाशित की थी, जिसमें उनकी पत्नी और दो सुनहरे बालों वाली किशोर बेटियों को कैमरे से दूर कर दिया गया था, तथा उनके चेहरे छुपे हुए थे।

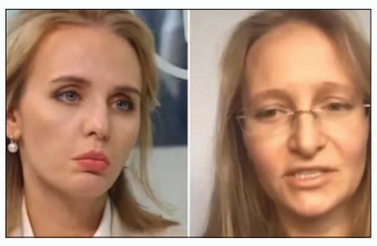

बंगाल की खाड़ी में सुरक्षा के लिहाज से गेमचेंजर बनेगी लिथियम बैट्री वाली पनडुब्बी

बर्लिन (एजेंसी)। भारतीय नौसेना अपने प्रोजेक्ट-75 के तहत छह पनडुब्बी खोज रही है। इन पनडुब्बियों में लिथियम-आयन बैटरी के साथ फ्यूल सेल एयर-इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक होगी, जो उन्हें लंबी अवधि तक समुद्र की गहराइयों में छिपने और तेज गति से बिनी अपनी लोकेशन बताए लक्ष्य तक पहुंचने की क्षमता देगा। भारतीय नौसेना सबसे बड़ी और सबसे तेज बनकर प्रतिस्पर्धा में बढ़त बनाए रखना नहीं चाहती, बल्कि सबसे शांत और घातक बनकर प्रतिस्पर्धा में बढ़त बनाए रखना चाहती है। जर्मन शिपबिल्डर थिसेनक्रुप भारत का कॉन्ट्रैक्ट लेने में सबसे आगे है। उसने अपनी 214-क्लास पनडुब्बियों की पेशकश की है।रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय नौसेना की आवश्यकता के हिसाब से इसे बनाया जाएगा। ईंधन-सेल-आधारित एआईपी सिस्टम और लिथियम-आयन बैटरी का संयोजन भारतीय नौसेना के लिए एक गेम-चेंजिंग क्षमता लाएगा। चीन की बड़ी नौसेना के मुकाबले भारतीय नौसेना को एक विश्वसनीय पनडुब्बी बल की जरूरत है। ईंधन-सेल एआईपी पनडुब्बी को कम गति पर लंबी दूरी तक चलने की इजाजत देता है। जबकि लिथियम-आयन बैटरी इसे उसके टार्गेट पर पहुंचने के लिए हाई स्पीड से चलने की इजाजत देता है। यूरोपीय देश इसका इस्तेमाल नहीं करते, लेकिन जापान करता रहा है। फ्रुहलिंग के मुताबिक पनडुब्बी लंबे समय तक पानी के नीचे रह सकेगी और हाई स्पीड से चल पाएगी, जो इसे और भी घातक बनाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय नौसेना की पनडुब्बी पानी में रहते हुए पूरे बंगाल की खाड़ी को कवर कर सकेगी।ये 212 सीडी पनडुब्बियों के उन्नत तकनीकी पहलुओं को एआईपी टेक्नोलॉजी से लैस करता है। 212 सीडी-क्लास पनडुब्बियां विशेष रूप से नॉर्वेजियन नौसेना के लिए बनाई गई हैं और बाल्टिक सागर में उनकी परिचालन आवश्यक्ताओं के हिसाब से बनाई गई हैं। 214-क्लास पनडुब्बियों को भारत की आवश्यक्ता के हिसाब से बनाया जाएगा। एआईपी टेक्नोलॉजी से जुड़े सबसे उन्नत बदलाव इसमें दिखेंगे। लिथियम आयन बैटरी से यह लैस होगा। इसमें एक उन्नत सेंसर और युद्ध प्रणाली होगी और इसमें स्टील्थ फीचर होगा, जो इसे दुश्मन के रडार पर नहीं आने देगा।

पाकिस्तान के पीएम ने चीन जाकर उठाया कश्मीर का मुद्दा, जिनपिंग बोले- एकतरफा फैसले नहीं ले सकता भारत

बीजिंग। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने बीजिंग में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ द्विपक्षीय बैठक के दौरान शहबाज ने एक बार फिर से कश्मीर का मुद्दा उठाया। उन्होंने जिनपिंग को कश्मीर से जुड़े सभी नए अपडेट्स की जानकारी दी। बैठक के बाद जारी हुए जॉइंट स्टेटमेंट में चीन ने कहा कि वह जम्मू-कश्मीर में भारत की एकतरफा कार्रवाई का विरोध करता है। भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से इस मुद्दे को लेकर विवाद रहा है। इस मसले को शांति के साथ ह के चार्टर और हस्ट्र के प्रस्तावों के तहत हल किया जाना चाहिए।

चीन पहले भी अलग-अलग मौकों पर कश्मीर को लेकर ऐसे बयान देता आया है, जिनका भारत ने हमेशा विरोध किया है। भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि कश्मीर पर भारत का क्या रुख है ये पूरी दुनिया जानती है। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हमारा अभिन्न हिस्सा हैं और हमेशा रहेंगे। इस मामले में किसी भी देश के पास टिप्पणी करने का अधिकार नहीं है।

चीन से निवेश बढ़ाने पर बातचीत

जिनपिंग से बैठक के बाद शरीफ ने बताया कि उन्होंने चीन से आपसी सहयोग और निवेश बढ़ाने लेकर बातचीत की। पाकिस्तान इस समय गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि वे पाकिस्तान के साथ आपसी साझेदारी और संबंधों को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही चीन पाकिस्तान में विकास को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। दोनों देश इस नए युग में क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और विकास पर साथ मिलकर काम करेंगे।

भीषण गर्मी के चलते हज यात्रियों के लिए सऊदी सरकार ने जारी की एडवाइजरी

रियाद। हज करने दुनियाभर से लाखों मुसलमान मक्का पहुंच रहे हैं। सऊदी अरब सरकार ने हज यात्रा को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियां की हैं। सऊदी सरकार ने हज यात्रियों को बेहतर सुविधा के लिए जरूरी कदम उठाए हैं, लेकिन भीषण गर्मी के चलते हज यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी की है। मक्का शहर में बढ़ते तापमान से बचने के लिए जरूरी कदम उठाने की सलाह दी है।

जीसस क्राइस्ट के जन्म से 1700 साल पहले भी हुआ था न्यूक्लियर वॉर

लंदन। शोधकर्ताओं का दावा है कि उन्हें इस बात के सबूत मिले हैं कि जीसस क्राइस्ट के जन्म से 1700 साल पहले भी न्यूक्लियर वॉर हुआ था। इस युद्ध ने इंसानों की जींस तक बदल दी। एक रिपोर्ट के मुताबिक बिली कार्सन नाम के एक वैज्ञानिक का दावा है कि उन्हें परमाणु धमाके के साफ साफ सबूत मिले हैं। जो रोगन के पॉडकास्ट में आए बिली कार्सन नाम के वैज्ञानिक ने दावा किया कि उन्होंने पाकिस्तान में मौजूद मोहेनजोदाडरो सभ्यता के पुरातात्विक स्थलों का दौरा किया। यहां उन्हें परमाणु धमाके के सबूत मिले। उन्होंने बताया कि इमारतें शीशा बन चुकी हैं और शव अब भी सड़कों पर पड़े हैं। जो कंकाल मिले हैं, उनमें लोग अपने हाथों को पकड़े दिख रहे हैं। इनसे पता चलता है कि रेडिएशन का लेवल काफी हाई था और इन्हें जानवरों ने भी नहीं खाया। बिली कार्सन ने बताया कि मोहेनजोदारो की सभ्यता काफी एडवांस थी। हालांकि इनके अचानक खत्म होने की वजह एस्टेरॉयड या कोई बाहरी तत्व माने जाते हैं लेकिन बिली का कहना है कि इससे शरीर की हड्डियां टूटी हुई मिलनी चाहिए। यहां मिले कंकाल बिल्कुल वैसा के वैसे हैं, इन पर जख्म या कुछ टकराने के भी निशान नहीं हैं। बिली की ये थ्योरी उनकी पुरानी थ्योरीज़ की तरह ही है, जिनमें उन्होंने कहा था कि धरती का आरंभ एलियन गॉड्स जैसी एक प्रजाति ने किया था। उन्होंने ही ऐसी जेनेटिक इंजीनियरिंग की थी, जिसकी वजह से इंसान भगवान में विश्वास करते हैं। वैज्ञानिकों ने ये दावा 4000 साल पुराने इंसानों के कंकालों के अध्ययन के बाद किया है। उन्होंने ऐसी-ऐसी बातें बताई हैं, जिन्हें जानकर आप हैरान रह जाएंगे।

फिलीपीन्स के बाद वियतनाम पर चीन की बुरी नजर

हनोई। चीन दक्षिण पूर्व एशिया के अपने पड़ोसी देशों के साथ आक्रामक रुख अपना रहा है। कुछ समय से चीन और फिलीपींस के बीच टकराव की स्थिति बनी है, लेकिन अब दक्षिणी चीन सागर में एक और देश चीन के निशाने पर है। वियतनाम ने अब चीन के सर्वेक्षण जहाजों की पानी में बढ़ती गतिविधियों पर चिंता जताई है। वियतनाम ने चीन की इन गतिविधियों को अवैध बताया है। वियतनामी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता फाम थू हांग ने बताया कि वियतनाम ने चीन से अपने विशेष आर्थिक क्षेत्र और महाद्वीपीय शेल्फ पर अवैध सर्वेक्षण गतिविधियों को रोकने की मांग की है। चीनी जहाजों की वियतनाम के विशेष आर्थिक क्षेत्र में घुसपैठ बढ़ी है, जो वियतनाम के खिलाफ खतरे को बढ़ा रही है। 2023 में एक चीनी सर्वेक्षण जहाज ने वियतनाम के विशेष आर्थिक क्षेत्र में एक महीने तक घुसपैठ की, जो देश के तट से 200 समुद्री मील तक फैला है। वियतनामी जलक्षेत्र में चीनी जहाजों के सर्वे करने को लेकर एक सवाल के जवाब में हांग ने कहा कि वियतनाम इन गतिविधियों को लेकर चिंतित है और इस मुद्दे को सुलझाने के लिए उसने चीनी अधिकारियों से संपर्क किया है। वियतनामी ने कहा कि चीन के अंतरराष्ट्रीय कानूनों, खासतौर से 1982 से संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून सम्मेलन और पूर्वी सागर में पक्षों के आचरण पर घोषणापत्र का पालन करना चाहिए। चीनी सर्वेक्षण जहाजों की बढ़ती मौजूदगी उसकी बड़ी योजना का हिस्सा है, जिसके तहत वह पूरी दक्षिणी चीन सागर पर अपना कब्जा जमाना चाहता है। ये इलाका तेल भंडार और प्राकृतिक गैस से समृद्ध है। यहां 11 अरब बैरल अप्रयुक्त तेल और 190 ट्रिलियन क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस होने का अनुमान है।

अमेरिका ने शुरु की नाइजीरिया से सैनिक वापसी, संयुक्त बयान में दी जानकारी

नियामी। अमेरिका ने नाइजीरिया से सैनिकों की वापयी शुरू कर दी है। सैनिक वापसी को लेकर दोनों देशों के रक्षा मंत्रालयों ने शनिवार को एक संयुक्त बयान जारी किया है। इस बयान में बताया गया है, कि अमेरिकी रक्षा विभाग और नाइजर गणराज्य के नाइजीरियाई राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने घोषणा की है कि नाइजर से अमेरिकी सेना और संपत्ति की वापसी प्रारंभिक तैयारियों से लेकर पुन-तैनाती तक बढ़ गई है।

भारत-पाकिस्तान में बराबरी के आधार पर दोस्ती करने का यह सही समय

-पाकिस्तानी के पूर्व सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने एक कार्यक्रम में कहा

इस्लामाबाद। देश के पीएम नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के रुप में आज शपथ ले रहे हैं। इसको लेकर पाकिस्तान में भी हलचल है। मोदी के शपथ ग्रहण समारोह से एक दिन पहले पाकिस्तानी के पूर्व सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने शनिवार को कहा कि पुराने प्रतिद्वंद्वी भारत और पाकिस्तान के बीच बराबरी के आधार पर दोस्ती के लिए यह सही समय है। जेल में बंद पूर्व पीएम इमरान खान के करीबी रहे चौधरी ने कहा कि इमरान खान और पूर्व सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा भारत के दोस्त बनाने के पक्ष में थे। वर्ष 2023 में इमरान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ को छोड़ चुके चौधरी यहां 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटिकल एजुकेशन' द्वारा आयोजित 'भारतीय चुनाव एवं दक्षिण एशिया पर आयोजित एक संगोष्ठी में बोल रहे थे।

चौधरी ने कहा कि भारतीय पंजाब यहां से महज कुछ किलोमीटर दूर है लेकिन पाकिस्तानियों को वहां जाने के लिए दुबई से उड़ान भरती पड़ती है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच कोई वीजा नहीं होनी चाहिए। अब समय आ गया है कि दोनों चिर प्रतिद्वंद्वियों को बराबरी के आधार पर दोस्ती करने की जरूरत है। चौधरी ने चेतावनी दी कि भारत और पाकिस्तान को अगले 15 सालों में सिंधु बेसिन में बड़ी जल चुनौतियों का सामना करना होगा, इसलिए उन्हें एक दूसरे से बातचीत करना चाहिए ताकि ऐसी चुनौतियों का मिलकर सामना कर सकें।

उन्होंने कहा कि पानी के मामले को लेकर सहयोग कायम करने में विफल रहने पर यह क्षेत्र अस्थिर हो सकता है। उन्होंने कहा कि मोदी की भाजपा की चरमपंथ नीतियों एवं राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में उसके सहयोगियों की नीतियों में वैचारिक अंतर संकेत देता है कि गठबंधन की एकता का बिखरना आसन्न है। उन्होंने कहा कि यह अस्थिरता बताती है कि बीजेपी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएगी जिससे राहुल गांधी अगले प्रधानमंत्री बन सकते हैं।

अमेरिका में खालिस्तानी समर्थकों ने इंदिरा गांधी की हत्या की झांकी निकाली

- भारतीय वाणिज्य दूतावास के सामने किया प्रदर्शन, अमेरिका मौन

वॉशिंगटन (एजेंसी)। कनाडा के वैंकूवर में खालिस्तानी समर्थकों ने भारत की दिवंगत पीएम इंदिरा गांधी की हत्या को दिखाने वाली झांकी निकाली। ऑपरेशन ब्लू स्टार के 40 साल होने पर यह आयोजन किया गया था। अब इसी तरह का मामला अमेरिका में भी सामने आया है, जो फ्रीडम ऑफ स्पीच के नाम पर भारत का विरोध करने की इजाजत दे रहा है। सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास के सामने 6 जून को इंदिरा गांधी की हत्या को दिखाने वाली झांकी निकाली गई। वैसे तो अमेरिका दुनिया को हिंसा न करने का ज्ञान देता है, लेकिन जब खालिस्तान समर्थक भारत की प्रधानमंत्री की हत्या का महिमामंडन करते हैं तो वह आंखें मूंद लेता है इस हरकत पर वह वह मौन है।

कनाडा में इंदिरा गांधी की हत्या को दर्शाने वाले पोस्टर को लेकर ट्रूडो सरकार के एक मंत्री ने कहा कि कनाडा में हिंसा को प्रोत्साहन दिया जाना स्वीकार नहीं किया जा सकता। भारतीय मूल के एक कनाडाई सांसद ने इस मुद्दे पर चिंता जताई और कहा की कि ऐसा करके खालिस्तानी समर्थक हिंदू कनाडाइयों के मन में हिंसा का डर पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी की 1984 में सिख अंगरक्षकों ने हत्या कर दी थी। इस बीच कनाडा के हाउस ऑफ कामंस में नेपियन निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधित्व भारतीय मूल के कनाडाई सांसद चंद्र आर्य ने कहा कि वैंकूवर में खालिस्तान समर्थक गोलियों से छलनी भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शव और साथ में अपनी बंदूक लिये खड़े उनके हमलावर अंगरक्षक के पोस्टर के माध्यम से हिंदू-कनाडाइयों के मन में हिंसा का डर पैदा करने कोशिश कर रहे हैं।

आर्य ने कहा कि ब्रम्पटन में भी सिख फॉर जस्टिस के गुरपतवंत सिंह पन्नू ने हिंदुओं को भारत चले जाने की धमकी दी थी, यह उन्हीं धमकियों की निरंतरता है। आर्य ने कनाडा की कानून प्रवर्तन एजेंसियों को तत्काल कार्रवाई करने की बात कही है। उन्होंने कहा कि यदि इसे यूं ही चलते रहने दिया गया तो संदेश देने के लिए इस्तेमाल की जा रही बंदूक की तस्वीरों से वाकई कुछ ऐसा न हो जाए। इंदिरा गांधी के माथे पर प्रमुखता से बिंदी को दर्शाना यह तय करना है कि लक्षित निशाने कनाडा में हिंदू हैं। भारत कहता रहा है कि कनाडा में अलगाववादियों, आतंकवादियों और भारत-विरोधियों को दी जाने वाली छूट कनाडा के साथ उसका मूल मुद्दा बना है।

पाकिस्तान में आतंकवादियों को मिल रही सुरक्षाकर्मियों से ज्यादा सैलरी

-खदानों की सुरक्षा के लिए सरकार आतंकियों को दे रही हफ्ता, इनमें बीएलए, टीटीपी शामिल

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान भले ही चीन को अपने देश में प्रोजेक्ट चलाने के लिए सुरक्षा देने के बड़े-बड़े वादे कर रहा है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। पाकिस्तान के बलूचिस्तान राज्य की सरकार अपने खनन उद्योग को सुरक्षा नहीं दे पा रही है। खनन उद्योग को बचाने के लिए आतंकी संगठनों को 'हफ्ता' दे रही है।

सरकार प्रतिबंधित आतंकवादी समूह बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) को पैसा दे रही है ताकि वे माइनिंग कंपनियों के कर्मचारियों पर हमला ना करें। दरअसल, बलूचिस्तान प्रांत के हमाई, डेगारी, माच, जियारत, चामलंग और अबेगम में कोयले का बड़ा भंडार है। यहां 21 करोड़ टन कोयले का अनुमान है। यहां स्थित 60 किमी लंबी चामलांग कोयला खदानों में उच्च वाष्पशील सी बिटुमिनस से लेकर उच्च वाष्पशील ए बिटुमिनस का कोयला होता है, जिसका भंडार 60 लाख टन है।

बलूचिस्तान में 3 हजार खदानें

पाकिस्तान सरकार माइनिंग कंपनियों को सुरक्षा देने के नाम पर आतंकी संगठनों से सांठगांठ करने में लगी हुई है। बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान माइनिंग सेक्टर का है। यहां 3 हजार से ज्यादा कोयला खदानें हैं। जहां 40 हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। गौरतलब है कि पाकिस्तान में हर साल 45.06 लाख टन टन कोयले का उत्पादन होता है और दुनिया में 34वें स्थान पर है।

बीएलए को ज्यादा पैसा

चामलंग खदानों से प्रतिदिन लगभग 200-250 ट्रक कोयला देश के विभिन्न हिस्सों के लिए रवाना होता है। कोयला 4000-4500 रुपए प्रति टन की कीमत पर बेचा जा रहा है। सूत्रों ने बताया कि कोयला खदानों से प्रत्येक टन खनन पर बलूचिस्तान सरकार को केवल 360 रुपए मिलते हैं। अर्धसैनिक बल फ्रंटियर कोर को खदानों की सुरक्षा के लिए प्रति टन 240 रुपए दिए जाते हैं। वहीं, प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) को खदानों और खनन खनिज ले जाने वाले ट्रकों पर हमला नहीं करने के लिए 260 रुपए प्रति टन दिया जाता है। यह राशि बैंक खाते के माध्यम से बीएलए को दी जाती है। वहीं, दूसरे प्रतिबंधित संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को खदानों पर हमला न करने के लिए 60 रुपए और दिए जाते हैं। हालांकि पाकिस्तान सरकार बीएलए और टीटीपी जैसे प्रतिबंधित समूहों के साथ ऐसी व्यवस्था करने से इनकार करती है, जो अब बलूच आतंकवादी समूहों के साथ गठबंधन बनाने के बाद बलूचिस्तान में फैल गए हैं।

टी20 विश्व कप: बांग्लादेश को हराने के इरादे से उतरेगी दक्षिण अफ्रीका

न्यूयार्क (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका की टीम सोमवार को यहां होने वाले टी20 विश्व कप क्रिकेट मुकाबले में बांग्लादेश को हराकर अपनी लय बनाये रखने उतरेगी। दक्षिण अफ्रीका की टीम ने अभी तक ग्रुप डी में अपने शुरुआती दोनो मैच जीते हैं , ऐसे में उसका लक्ष्य यहां भी जीत हासिल करना रहेगा। इस मुकाबले में हालांकि दोनों ही टीमों के लिए नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम की पिच पर खेलना आसान नहीं होगा। अब तक इस पिच पर कोई भी टीम बड़ा स्कोर नहीं बना पायी है।

दक्षिण अफ्रीकी टीम ने हालांकि अपने पहले दो मैच इसी मैदान पर खेले हैं, ऐसे में उसके लिए इस पिच पर खेलना बांग्लादेश के मुकाबले आसान रहेगा। बांग्लादेश ने इस मैदान पर एकमात्र अभ्यास मैच भारत से खेला था जिससे उसे करारी हार मिली थी जिससे उसका मनोबल कमजोर रहेगा। दक्षिण अफ्रीका की टीम के लिए भी ये मुकाबला आसान नहीं है। इसका कारण है कि उससे नीदरलैंड और श्रीलंका के खिलाफ मुकाबले जीते हैं पर उसके बल्लेबाजों को यहां रन बनाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा था। दक्षिण अफ्रीका के लिए राहत की बात ये है कि उसके गेंदबाजों ने अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है। ऐसे में बांग्लादेशी बल्लेबाजों के लिए इस गेंदबाजों का सामना करना कठिन होगा। , दक्षिण अफ्रीकी टीम में एनरिक नोर्किया, कैगिसो रबाडा, मार्को यानसन और ओटनील बार्टमेन जैसे तेज गेंदबाजों के साथ ही केशव महाराज जैसा अनुभवी स्पिनर भी है।दक्षिण अफ्रीका की चिंता हालांकि शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों का अब तक रन नहीं बनाना रहा है। डच टीम के खिलाफ हुए मुकाबले में उसकी टीम पहले 10 ओवरों में केवल 33 रन बना पाई थी। इसके बाद ट्रिस्टन स्टब्स और डेविड मिलर की साझेदारी के कारण ही वह हार से बची। दक्षिण अफ्रीका के अभी दो मैच में चार अंक हैं और बांग्लादेश के खिलाफ जीत से सुपर 8 में जगह बनाने में उसे आसानी होगी।

वहीं आंकड़ों पर नजर डाले तो दक्षिण अफ्रीका की टीम अभी तक टी20 अंतरराष्ट्रीय

क्रिकेट में बांग्लादेश से कोई मैच नहीं हारी है। बांग्लादेश ने इस टूर्नामेंट में श्रीलंका को हराया है और इसी से प्रेरणा लेकर वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उतरेगी पर जीत के लिए उसके बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना रहेगा। भारत के खिलाफ अभ्यास मैच के साथ ही श्रीलंका के खिलाफ ग्रुप चरण के मैच में भी उसे बल्लेबाजों को रनों के लिए खासा संघर्ष करना पड़ा था। बांग्लादेश की ओर से बल्लेबाजी में केवल लिटन दास ही कुछ हद तक रन बना पाये थे। बांग्लादेश को इस मुकाबले में जीत दर्ज करनी है तो उसके सभी बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। बांग्लादेश के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज अब तक के हुए मुकाबलों में लय में नहीं दिखे। कुल मिलाकर देखा जाये तो ये मुकाबला रोमांचक रहेगा।

टीम

दक्षिण अफ्रीका = एडेन मार्कराम (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, गेराल्ड कोएट्जी, क्विंटन डी कॉक, ब्योर्न फोर्टुइन, रीजा हेंड्रिक्स, मार्को यानसन, हेनरिक क्लासेन, केशव महाराज, डेविड मिलर, एनरिक नोर्किया, कैगिसो रबाडा, रयान रिकेल्टन, तबरेज शम्सी, ट्रिस्टन स्टब्स।

बांग्लादेश = नजमुल हुसैन शंटो (कप्तान), तस्कीन अहमद, लिटन दास, सौम्या सरकार, तंजीद हसन तमीम, शाकिब अल हसन, तौहीद हृदय, महमूद उल्लाह रियाद, जैकर अली अनिक, तनवीर इस्लाम, शाक महेदी हसन, रिशाद हुसैन, मुस्तफिजुर रहमान, शोरीफुल इस्लाम, तंजीम हसन साकिब। यात्रा करने वाले रिजर्व= अफीफ हुसैन, हसन महमूद।

गॉफ और सिनियाकोवा ने फ्रेंच ओपन महिला युगल खिताब जीता

पेरिस (एजेंसी)। कोको गॉफ ने रविवार को यहां फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट में कैटरीना सिनियाकोवा के साथ मिलकर अपना पहला महिला युगल ग्रैंडस्लैम खिताब जीता। पिछले साल अमेरिकी ओपन का महिला एकल खिताब जीतने वाली 20 साल की अमेरिका की गॉफ और चेक गणराज्य की सिनियाकोवा ने जैस्मिन पाओलिनी और सारा इरानी की इटली की जोड़ी को सीधे सेट में 7-6, 6-3 से हराया। गॉफ ने तीसरी बार ग्रैंडस्लैम महिला युगल के फाइनल में जगह बनाई। इससे पहले उन्हें 2022 में रोलां गैरो पर ही और 2021 में अमेरिकी ओपन में खिताबी मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा था।

गॉफ ने कहा, ''तीसरी बार में भाग्यशाली रही। मेरे साथ खेलने के लिए धन्यवाद कैटरीना। टूर्नामेंट से दो दिन पहले हमने एक साथ खेलने का फैसला किया। प्रशंसकों को भी धन्यवाद। मुझे पता है कि रविवार को सुबह साढ़े 11 बजे अधिकांश लोगों के लिए जल्दी होता है। मेरे लिए यह जल्दी है।'' पाओलिनी को शनिवार को रोलां गैरो पर एकल फाइनल में चार बार की चैंपियन इगा स्वियातेक के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। स्वियातेक ने एकल सेमीफाइनल में गॉफ को हराया था।

सिनियाकोवा ने महिला युगल में अपनी जोड़ीदार बारबरा क्रेसिकोवा के साथ करियर स्लैम (चारों ग्रैंडस्लैम जीतना) पूरा किया है। वह फ्रेंच ओपन में 2018 और 2021 की भी महिला युगल चैंपियन हैं। इरानी भी अपनी पूर्व जोड़ीदार रॉबर्टा विन्सी के साथ युगल में करियर स्लैम पूरा कर चुकी हैं। इस जोड़ी ने 2012 में फ्रेंच ओपन खिताब जीता था। उसी साल इरानी को एकल फाइनल में शिकस्त का सामना करना पड़ा था।

मैदान में बल्लेबाजों को परेशान करने में बहुत मजा आता है: सौरभ

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका की पाकिस्तान पर जीत में भारतीय मूल के तेज गेंदबाज सौरभ नेत्रवलकर ने अहम रोल निभाया है। सौरभ ने सुपर ओवर में शानदार गेंदबाजी कर अमेरिका को जीत दिलाई। सौरभ भारत की ओर से अंडर 19 वर्ल्ड कप खेल चुका है। सौरभ का कहा कि उन्हें मैदान के बाहर 'कोडिंग' करने और मैदान के अंदर बल्लेबाजों को परेशान करने में बहुत मजा आता है। अमेरका ने पाकिस्तान को हराकर विश्व कप में अपनी लगातार दूसरी जीत दर्ज की है।बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सौरभ नेत्रवलकर ने सुपर ओवर में पूर्व चैंपियन पाकिस्तान को लक्ष्य छूने नही दिया जिससे अमेरिका टूर्नामेंट का सबसे बड़ा उलटफेर करने में सफल रही। इससे सौरभ चर्चा का विषय बन गए। सौरभ ने कहा कि यह केवल एक मैच था जिसमें हमने अच्छा प्रदर्शन किया। हमारा ध्यान अगले मैच पर है और सच कहूं तो अमेरिका की टीम में शामिल सभी खिलाड़ी अपनी उपलब्धियां को आत्मसात करने की कोशिश कर रहे हैं। सौरभा मुंबई के रहने वाले हैं और वह भारत की अंडर 19 टीम के सदस्य रहे हैं।

सौरभ पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। उन्होंने क्रिकेट और अपनी नौकरी के बीच सामंजस्य स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि वह कभी दबाव महसूस नहीं करते जब आप किसी चीज को पसंद करते हैं तब वह आपके लिए काम नहीं रह जाता है। इसलिए जब मैं मैदान पर होता हूं तो मुझे गेंदबाजी करना और बल्लेबाजों को परेशान करना पसंद है। जब मैं कोडिंग करता हूं तो मैं उसमें रम जाता हूं। इसलिए मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मैं जबरदस्ती कोई काम कर रहा हूं। अमेरिका टीम लगातार दो मैच जीतकर ग्रुप में चार अंक लेकर टॉप पर है। इस ग्रुप में भारत दो अंक के साथ दूसरे नंबर पर है जबकि पाकिस्तान को खाता खुलने का इंतजार है। अमेरिका का 12 जून को भारत से मुकाबाल होगा।

टीम इंडिया को रहना होगा होशियार, भारत-यूएसए का मुकाबला 12 को

– पाकिस्तान को हराकर अमेरिका ने क्रिकेट जगत में मचाया था तहलका

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेजबान अमेरिका ने टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को हराकर तहलका मचा दिया है। अमेरिका की इस विश्व कप में यह दूसरी जीत है। इससे पहले उसने कनाडा को हराकर इस टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत जीत से की थी। ग्रुप ए में भारत, पाकिस्तान, कनाडा, आयरलैंड और अमेरिका की टीमें हैं। सुपर ओवर में पाकिस्तान को हराने वाली अमेरिकी टीम से भारत को होशियार रहना होगा। उसके खिलाड़ी फॉर्म में हैं और दबाव वाले क्षण में बिखरने के बजाए एकजुट रहते हैं। भारत और अमेरिका का विश्व कप के 25वें मैच में आमना सामना होगा। यह मुकाबला 12 जून को न्यूयॉर्क में खेला

जाएगा। अमेरिका ने टी20 विश्व कप में अभी तक दो मैचों में जीत दर्ज की है वह सिर्फ महज एक संयोग नहीं है। टीम ने दमदार खेल खेला है। अमेरिका की टीम में भारत, वेस्टइंडीज, साउथ अफ्रीका मूल के खिलाड़ी खेल रहे हैं। इनमें से कई ऐसे हैं जो अकेले दम पर मैच को पलटने का दम रखते हैं। अमेरिका ने टी20 विश्व कप में आने से पहले टी20 द्विपक्षीय सीरीज में बांग्लादेश को 2-1 से हराया था। अब टी20 विश्व कप में अमेरिका की टक्कर भारत से होने वाली है।

अमेरिकी टीम ने कनाडा के खिलाफ रिकॉर्ड 94 रन बनाने वाले एरोन जोंस को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया था जबकि पाकिस्तान के खिलाफ मैच में अर्धशतकीय पारी खेलने वाले कप्तान मोनांक पटेल को यह अवॉर्ड दिया गया। अमेरका के ओपनर स्टीवन टेलर 26 टी20 इंटरनेशनल मैच खेल चुके हैं। उनके नाम 754 रन दर्ज हैं। वह एक शतक और चार अर्धशतक जड़ चुके हैं। मोनांक पटेल के नाम 27 टी20 में 507 रन दर्ज हैं जिसमें तीन फिफ्टी शामिल हैं। साउथ अफ्रीकी मूल के एंड्रीज गॉस आठ मैचों में 261 रन बनाए हैं जिसमें तीन अर्धशतक हैं। वहीं मिडिल ऑर्डर में एरोन जोंस हैं। जोंस 28 मैचों में 514 रन बना चुके हैं। बॉलिंग में अमेरिका के पास सौरभ नेत्रवलकर के रूप में शारदार गेंदबाज है जो 29 विकेट टी20 में ले चुके हैं। अली खान के पास 10 मैचों में खेलने का अनुभव है जो 140 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करते हैं। भारतीय मूल के हरमीत सिंह अपनी स्पिन गेंदबाजी से 8 मैचों में 7 विकेट ले चुके हैं। भारतीय टीम को अमेरिका के साथ रणनीति के तहत खेलना होगा क्योंकि यह टीम उलटफेर करने में माहिर है।

बालाजी ने भारतीय गेंदबाजों को फुल लेंथ गेंदबाजी फेंकने को कहा

न्यूयॉर्क । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व तेज गेंदबाज लक्ष्मीपति बालाजी ने कहा है कि न्यूयॉर्क के नसाऊ क्रिकेट स्टेडियम में पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले मैच में भारतीय गेंदबाजों को ज्यादा फुल लेंथ गेंदबाजी करने को कहा है । उन्होंने कहा कि अमेरिका के खिलाफ हार के बाद पाक टीम का मनोबल गिरा रहेगा पर वह इस मैच मे जीत के लिए पूरी ताकत लगा देगी ऐसे में भारतीय गेंदबाजों को सतर्क रहना होगा । उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि भारतीय टीम के तेज गेंदबाज अब तक शानदार प्रदर्शन करते रहे हैं । अर्शदीप को छोड़कर टीम के सभी गेंदबाज तीनो प्रारूप खेलते हैं । साथ ही कहा कि सफलता के लिए आपको बुनियादी बातों पर जमे रहना होगा ।

भारतीय क्रिकेटरों की मिली अमेरिकी राष्ट्रपति जैसी सुरक्षा, आईएसआईएस से मिली है धमकी

न्यूयॉर्क । आतंकी संगठन आईएसआईएस की धमकी को देखते हुए टी20 विश्वकप में भारतीय क्रिकेट टीम को अमेरिकी राष्ट्रपति के स्तर की सुरक्षा मुहैया करायी गयी है । वहीं आईएसआईएस ने यहां भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैच में हमले की धमकी दी थी । इसके बाद से ही सुरक्षाबलों ने स्टेडियम की सुरक्षा व्यवस्था बेहद कड़ी कर दी है । भारत ओर पाक के बीच केवल आईसीसी मुकाबलों में आमना–सामना होता है । ऐसे में इस मैच को लेकर प्रशंसकों में भी जबरदस्त उत्साह है । स्टेडियम में होने वाली भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा बल सतर्क हैं । आयोजकों ने इस मैच में किसी भी प्रकार के खतरे से निपटने के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये हैं। आईएसआईएस से मैच देखने आने वाले प्रशंसकों के लिए भी खतरे की आशंकाएं जतायी जा रही थीं पर अधिकारियों ने कहा है कि वे खिलाड़ियों और दर्शकों की सुरक्षा पक्की करने के सभी प्रयास कर रहे हैं । नासाउ काउंटी पुलिस कमिश्नर पैट्रिक राइडर ने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था को इस कदर बढ़ाया गया है कि ये राष्ट्रपति को मिलने वाली सुरक्षा के समान हो गयी है । ऐसे में किसी भी प्रकार की कोई बाधा नहीं आयेगी । टूर्नामेंट की शुरुआत में ही आईएसआईएस से मिली आतंकी धमकी के बाद मैच की सुरक्षा बढ़ा दी गयी थी ।

पाक को कमजोर समझना गलत होगा : गेल

न्यूयॉर्क । वेस्टइंडीज के क्रिकेटर क्रिस गेल कहा है कि भारतीय टीम को पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले टी20 विश्व कप विरोधी टीम का कम नहीं आंकना चाहिये । भारतीय टीम ने आयरलैंड पर जीत के साथ इस आईसीसी टूर्नामेंट में अच्छी शुरुआत की है पर पाक के खिलाफ मुकाबला आसन नहीं रहेगा । अमेरिका के खिलाफ सुपर ओवर में पाक को हार का सामना करना पड़ा था । गेल ने इस अहम मैच को लेकर कि पाक टीम का मनोबल गिरा हुआ है और उसके लिए भारतीय टीम का सामना करना कठिन रहेगा । गेल ने हालांकि कहा कि इन दोनो टीमों के बीच मुकाबला रोमांचक रहेगा । उन्होंने कहा कि भारतीय टीम जीत की प्रबल दावेदार रहेगी । ऐसे में भारतीय टीम को चुनौती देने के लिए पाकिस्तान को एकजुट होकर खेलना होगा । उन्होंने कहा कि अब एक और हार के साथ ही पाक टीम टूर्नामेंट से बाहर होगी । गेल ने अमेरिकी टीम के प्रदर्शन की भी प्रशंसा की है । अमेरिकी टीम कनाडा और पाकिस्तान पर जीत के बाद ग्रुप ए अंक तालिका में शीर्ष पर है । उन्होंने कहा कि मैं भी पाकिस्तान पर अमेरिका की जीत से अभिभूत था । यह एक बहुत बड़ा परिणाम है जो न केवल उनके लिए अविश्वसनीय है बल्कि पूरे क्रिकेट के लिए बहुत बड़ा संकेत है । आप विश्व कप में हमेशा कुछ उलटफेर की उम्मीद करते हैं और अमेरिका ने इस बार कनाडा के अलावा पाक को भी हराकर अपनी क्षमताओं को साबित किया है ।

टी20 विश्वकप : ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार से इंग्लैंड पर टी20 विश्वकप से बाहर होने का खतरा मंडराया

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। इंग्लैंड की टीम को टी20 विश्वकप क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार का सामना करना पड़ा है। ऑस्ट्रेलिया की टीम ग्रुप बी के इस मैच में इंग्लैंड ने 36 रनों से हराया। ऑस्ट्रेलियन टीम ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए 201 रन बनाये जिसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड टीम 6 विकेट पर 165 रन ही बना पायी। इससे इंग्लैंड पर विश्वकप से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। इसका कारण है कि इंग्लैंड के दो मैचों के बाद सिर्फ एक अंक है और वह अंक तालिका में चौथे नंबर पर है। वहीं ऑस्ट्रेलिया की टीम इंग्लैंड को हराकर ग्रुप में 4 अंक के साथ पहले नंबर पर है जबकि स्कॉटलैंड 3 अंक के साथ दूसरे और नामीबिया 2 अंक लेकर तीसरे नंबर पर हैं। हर

ग्रुप से सुपर-8 में शीर्ष-2 टीमें पहुंचेंगी। इंग्लैंड को सुपर-8 में जाने के लिए अपने बाकी बचे दोनों मैच जीतने के साथ ही स्कॉटलैंड के परिणाम पर भी नजरें रखनी होगी। अगर स्कॉटलैंड ने एक और मैच जीता और उसका नेटरनरेट बेहतर रहा तो इंग्लैंड टी20 विश्वकप से बाहर हो जाएगी।

इस मैच में ऑस्ट्रेलिया की ओर से मिचेल मार्श (35), ट्रैविस हेड (34), मार्कस स्टॉयनिस (30) और ग्लेन मैक्सवेल (28) रन की पारी खेली। मैथ्यू वेड ने 17 और टिम डेविड ने 11 रन बनाए।

इसके बाद 202 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की टीम की अच्छी शुरुआत रही। कप्तान व ओपनर जॉस बटलर (42) और फिल सॉल्ट (37) ने 7.1 ओवर में 73 रन बनाकर अच्छी शुरुआत की पर बाद के बल्लेबाज इसका लाभ नहीं उठा पाये। जिससे उसे हार का सामना करना पड़ा।

संजीवनी ने पोर्टलैंड में महिलाओं की 10,000 मीटर दौड़ में हासिल किया पहला स्थान

पोर्टलैंड (अमेरिका) । एशियाई चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता धाविका संजीवनी जाधव ने पोर्टलैंड ट्रैक फेस्टिवल हाई परफॉर्मेंस प्रतियोगिता में महिलाओं की 10,000 मीटर दौड़ 32 मिनट 22.77 सेकंड में पूरी करके पहला स्थान हासिल किया । इस 27 वर्षीय धाविका ने इससे पहले भी पोर्टलैंड में अच्छा प्रदर्शन किया है । वह पिछले साल यहां दूसरे स्थान पर रही थी । इस स्पर्धा में भाग ले रही

एक अन्य भारतीय सीमा 32 मिनट 55.91 सेकंड का समय लेकर पांचवें स्थान पर रही । राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों के पदक विजेता अविनाश साबले ने पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज में 8 मिनट 21.85 सेकंड का समय लेकर दूसरा स्थान हासिल किया। उन्होंने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में 8 मिनट 11.20 का समय लेकर राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए रजत पदक जीता था लेकिन यहां वह इस प्रदर्शन को नहीं दोहरा पाए । महिला वर्ग में पिछले साल एशियाई खेलों में स्वर्ण (5000 मीटर) और रजत (3000 मीटर स्टीपलचेज) जीतने वाली पारुल चौधरी स्टीपलचेज में तीसरे स्थान पर रही । उन्होंने नौ मिनट 31.38 सेकंड का समय निकाला, जो पिछले साल बुडापेस्ट में बनाए गए उनके नौ मिनट 15.31 के राष्ट्रीय रिकॉर्ड से लगभग 16 सेकंड अधिक था । इस स्पर्धा में भाग ले रही एक अन्य भारतीय प्रीति 10 मिनट 12.88 सेकंड का समय लेकर 20वें स्थान पर रही । कोलराडो में अभ्यास कर रहे भारत के कई एथलीट पोर्टलैंड ट्रैक फेस्टिवल में भाग ले रहे हैं ।

वसीम-वकार ने चुनी अपनी पसंदीदा टीम, एक ने भारत तो दूसरे ने किया पाक का समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान वसीम अकरम ने रविवार को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में मेन इन ग्रीन के खिलाफ होने वाले टी20 विश्व कप मैच में भारत को जीतने का पसंदीदा बताया है। टूर्नामेंट में रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम बाबर आजम की पाकिस्तान के खिलाफ अधिक मजबूत दिखती है। भारत ने अपने शुरुआती मैच में आयरलैंड के खिलाफ आत्मविश्वास से भरी जीत दर्ज की, जबकि पाकिस्तान ने अपने अभियान की शुरुआत रोमांचक सुपर ओवर में सह-मेजबान यूएसए से हार के साथ हुई। हाई-ऑक्टेन मुकाबले से पहले दोनों टीमों को नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम की पिच की अप्रत्याशितता का समान सामना करना पड़ेगा, जिसने टूर्नामेंट में अब तक टीमों के लिए एक कठिन चुनौती पेश की है। हालांकि भारत ने इस स्थल पर दो मैच खेले हैं, जबकि पाकिस्तान को अभी भी सतह के बारे में जानकारी नहीं है। टूर्नामेंट के मैच के लिए उनकी भविष्यवाणी के बारे में पूछे जाने पर अकरम ने मैच जीतने के लिए भारत को पसंदीदा बताने में संकोच नहीं किया, साथ ही इस बात पर भी प्रकाश डाला कि मैच का परिणाम टी20आई में किसी भी तरफ बदल सकता है। अकरम ने कहा, 'अगर हम भारत के फॉर्म को देखें, तो भारत आम तौर पर एक बेहतर टीम है। एक तरह से बेहतर टीम है कि वे उस खेल में पसंदीदा हैं। मैं भारत को 60त्न और पाकिस्तान को 40त्न दूंगा। लेकिन यह टी20आई है, एक अच्छी पारी, एक अच्छा स्पेल, खेल जल्दी बदल सकता है। मुझे लगता है कि हर कोई टूर्नामेंट के खेल का इंतजार कर रहा है।' दूसरी ओर, अकरम के पूर्व साथी और घातक तेज गेंदबाज वकार यूनिस ने उनके ठोस तेज गेंदबाजी आक्रमण के कारण पाकिस्तान का

पक्ष लिया है। यूनिस ने कहा, 'मेरा दिल पाकिस्तान की ओर है, लेकिन मैंने इस टूर्नामेंट में अब तक जो देखा है, उसके अनुसार न्यूयॉर्क की पिच तेज गेंदबाजों के लिए बहुत अनुकूल है। इसलिए यह न्यूयॉर्क की सतह की वजह से थोड़ा सा समतल है।'

पूजा तोमर ने रचा इतिहास, यूएफसी में जीत दर्ज करने वाली पहली भारतीय बनी

केंटकी । पूजा तोमर अल्टीमेट फाइटिंग चैंपियनशिप (यूएफसी) में जीत दर्ज करने वाली भारत की पहली मिश्रित मार्शल आर्ट फाइटर बन गई है । पहली बार इस तरह की प्रतियोगिता में भाग ले रही पूजा ने यूएफसी लुइसविले में शनिवार को स्ट्रॉवेट (52 किग्रा) मुकाबले में ब्राजील की रेयान डॉस सैंटोस पर 30–27, 27–30, 29–28 से विभाजित निर्णय से जीत हासिल की । पूजा ने मुकाबले के बाद कहा, 'यह केवल मेरी जीत नहीं है । यह भारत के सभी प्रशंसकों और भारतीय फाइटर की जीत है । इससे पहले सभी सोचा

करते थे कि भारतीय फाइटर चुनौती पेश नहीं कर सकते हैं । मैं केवल जीत के बारे में सोच रही थी और मैंने दिखाया कि भारतीय फाइटर हारने वालों में शामिल नहीं हैं ।' ' 'साइक्लोन' के नाम से मशहूर 30 वर्षीय पूजा ने पिछले साल अक्टूबर में यूएफसी के साथ अनुबंध किया था और इस तरह से वह मिश्रित मार्शल आर्ट्स की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली भारत की पहली महिला बन गईं। अंशुल जुबली और भरत कंडारे ने यूएफसी में विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है । उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के बुधाना गांव में जन्मी पूजा पांच बार की राष्ट्रीय वुशु चैंपियन हैं और कराटे और ताइक्वांडो में भी भाग लेती रही है । पूजा ने कहा, 'मुझे जीत की पूरी उम्मीद थी और मैंने काफी आक्रमण किया लेकिन मैं अपना शत प्रतिशत प्रदर्शन नहीं कर पाई । दूसरे राउंड में मैं दबाव महसूस कर रही थी । मुझे अभी काफी सुधार करने की जरूरत है ।'

संचार की कमी से कुछ फैसले थे जो मेरे पक्ष में नहीं आए: श्रेयस अय्यर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के दाएं हाथ के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने कहा है कि वह अपने शरीर पर काम करना चाहते थे लेकिन संचार की कमी के चलते उन्हें टीम इंडिया के साथ-साथ केंद्रीय अनुबंध से हाथ धोना पड़ा। पिछले साल मार्च में पहली बार पीठ में चोट लगने के बाद श्रेयस अय्यर वनडे विश्व कप में भी खेले और शानदार प्रदर्शन भी किया था। उन्होंने टूर्नामेंट में 530 रन बनाए थे।

श्रेयस अय्यर ने अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो पोस्ट कर कहा कि वह वनडे विश्व कप के बाद अपने शरीर पर काम करने के लिए ब्रेक लेना चाहते थे लेकिन गलत संचार के कारण उन्हें निराशा मिली। वह रणजी ट्रॉफी और आईपीएल जीतने में सक्षम होने पर खुशी व्यक्त करने से पहले बल्ले से अच्छा प्रदर्शन करके झटके का जवाब देना चाहते थे। उन्होंने कहा कि विश्व कप मेरे लिए खास था। मैं उसके बाद ब्रेक लेना चाहता था, कुछ क्षेत्रों में अपनी ताकत बनाना चाहता था - संचार की कमी के कारण, कुछ फैसले थे जो मेरे पक्ष में नहीं आए। दिन के अंत में बल्ला हमेशा मेरे हाथ में रहेगा और प्रदर्शन करना और ट्रॉफियां जीतना मुझ पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि मैं जानता था कि एक बार जब मैं रणजी ट्रॉफी और आईपीएल जीत लूंगा, तो जो कुछ भी हुआ उसका यह एक उपयुक्त जवाब होगा। अतीत में, शुक्र है कि सब कुछ सही जगह पर हुआ, हमारे पास भविष्य में जीतने के लिए बहुत सारी ट्रॉफियां हैं।

अप्रैल 2023 में पीठ की सर्जरी कराने के बाद अय्यर ने कहा कि बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में नेट्स प्रक्टिस में खुद को कड़ी मेहनत करने से उन्हें आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिली। सर्जरी के बाद, वह एनसीए में थे, नेट्स पर अभ्यास कर रहे थे। उन्होंने कि उन्होंने अपने जीवन में कभी इतने लंबे समय तक बल्लेबाजी नहीं की। वह हमेशा खुद को नेट्स में बल्लेबाजी करने से रोकता था क्योंकि मुझे शिकायत थी कि विकेट उतने अच्छे नहीं थे। अचानक, मैंने खुद से कहा कि खुद को कठिन परिस्थितियों में रखो क्योंकि युद्ध मैदान के बाहर जीता जाता है, मैदान पर नहीं। जब आप अपने दिमाग से खेलते हैं, जब आप खुद को कठिन परिस्थितियों में डालने के लिए अपने दिमाग को चुनौती देते हैं और आप खुद तय करते हैं कि आप जीतेंगे या नहीं।

समाचार गेट
TITLE CODE: HARHIN11369
स्वामी (मुद्रक, प्रकाशक) रवीना यादव द्वारा साईं प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर-6 नोएडा 201301, उत्तर प्रदेश से मुद्रित करवाकर कार्यालय मकान नंबर 2, निअर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, वल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) से प्रकाशित किया। संपादक, कृष्णा शर्मा। सम्पादकीय कार्यालय: मकान नंबर 2, निअर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, वल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) पीआरबी एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा। कानूनी सलाहकार: जानक शर्मा, 9818180269, ईमेल : samachargate@gmail.com

देवभूमि और श्रद्धालुओं की रक्षक धारी देवी

उत्तराखण्ड के श्रीनगर में प्राचीन एवं ऐतिहासिक धारी माता मंदिर विस्थापित किये जाने के बाद से कहा जा रहा है कि मंदिर से जैसे ही धारी माता की मूर्ति हटाई गई थी, उसके तुरंत बाद ही इस पर्वतीय राज्य में प्रलय जैसी स्थिति निर्मित हुई। हालांकि विज्ञान के इस युग में इस तर्क से सहमत नहीं हुआ जा सकता फिर भी स्थानीय लोगों का मानना है कि धारी माता मंदिर विस्थापन की वजह से ही यह तबाही आई। परंपरागत रूप से माना जाता है कि धारी माता, चारों धाम की यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं और उत्तराखण्ड की जनता की रक्षक माता हैं। नवरात्रि के दिनों में यहां अच्छी खासी रौनक रहती है और दूर दूर से श्रद्धालु यहां अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए मन्नत मांगने आते हैं।

श्रीमद् भागवत गीता में बताया गया है कि 108 शक्ति पीठों में से एक मां धारी देवी का पवित्र मन्दिर अलकनंदा नदी के किनारे श्रीनगर-बद्रीनाथ राजमार्ग पर स्थित है। कहा जाता है कि मां धारी देवी की इस मूर्ति का रूप समय के साथ बदलता रहता है। स्थानीय मान्यता के मुताबिक एक बार मंदिर में बाढ़ आ गई तो मूर्ति चल कर एक चट्टान पर आ गई और रोने लगी, जब ग्रामीणों ने मूर्ति का रोना सुना तो वे वहां पहुंचे तब दिव्य शक्ति ने उनसे उस जगह पर मूर्ति स्थापित करने के लिए कहा। तभी से वह मूर्ति वहां स्थापित थी जिसे हाल ही में विस्थापित किया गया। हालांकि धारी देवी की मूर्ति हटाने का भारी विरोध हुआ लेकिन कथित रूप से बिजली संयंत्र माफिया के दबाव के आगे प्रशासन झुक गया जो मंदिर की जगह एक बड़ा ऊर्जा संयंत्र स्थापित करना चाहता था।

धारी देवी इस क्षेत्र की कुलदेवी भी हैं जिन्हें गांव के लोग सदियों से पूजते आए हैं। पौराणिक मान्यता है कि पिछले 800 सालों से धारी देवी अलकनंदा नदी के बीच बैठकर नदी की धारा को काबू में रखती थीं। 16 जून 2013 को स्थानीय लोगों के विरोध के बावजूद धारी देवी का मंदिर नदी के बीच से हटाकर ऊपर सुरक्षित जगह पर लाया गया और उसी शाम केदारनाथ में बादल फटा। कुछ संतों का भी कहना है कि धारी देवी की मूर्ति को हटाया गया था और इसी कारण जलप्रलय हुआ जो निश्चित रूप से धारी देवी का ही प्रकोप है। उनका यह भी कहना है कि धारी देवी के गुस्से से ही केदारनाथ और उत्तराखंड के अन्य इलाकों में तबाही मची। धारी देवी देश के नास्तिक लोगों को समझाना चाहती थीं कि हिमालय और यहां की नदियों को ना छुआ जाए।

धारी देवी मंदिर को हटाने का विरोध इस तर्क के साथ भी हो रहा था कि मंदिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होती है, हिंदू धर्म में माना जाता है कि मूर्ति में प्राण है, ऐसे में शक्तिपीठों में शामिल मां धारी देवी मंदिर को हटाने की अनुमति कैसे दी जा सकती है। साथ ही यह भी तर्क दिया जा रहा था कि यदि बांध बनेगा तो गंगा कहां बचेगी। गंगा की अविरलता से ही जीवन बचेगा। मां काली का रूप मानी जाने वालीं धारी देवी के इस मंदिर के बारे में यह भी कहा जाता है कि 1880 में भी धारी देवी को हटाने का प्रयास हुआ था, तब भी केदारनाथ में भयंकर बाढ़ आ गई थी। उसके पश्चात धारी देवी को फिर किसी ने हटाने का प्रयास नही किया। मान्यताओं के मुताबिक धारी देवी और केदारनाथ दोनों की स्थापना तंत्र-शास्त्र पर की गई है, जो पहाड़ों और नदियों की बाढ़ से इस क्षेत्र की रक्षा करती हैं।

भोजन से प्रभावित होता है मन

अध्यात्म में भोजन का बड़ा महत्व है। यदि यह ठीक न हो तो सूक्ष्म शरीर बिगड़ जाता है। याद रखिए जो हम अन्न खाते हैं, उसमें से एक चौथाई से मन बनता है, एक चौथाई से रक्त बनता है, एक चौथाई शुक्र में और एक चौथाई मल में जाता है। ऐसी चार प्रक्रिया घटती है। हमको मन, रक्त और शुक्र संभालकर रखना है और मल का परित्याग करना पड़ता है। देखिए हमारे शास्त्रों में कैसी-कैसी सूक्ष्म बातें भी बताई हैं।

भोजन और भजन के समय साधक का प्राणबल सतेज हो जाता है तो वातावरण के जो अणु होते हैं, वह उनके पास खींचे चले आते हैं। यदि रजोगुण, तमोगुण की स्थिति होगी तो उसके कण, उसके अणु, साधक के प्राण में आने लगते हैं। इसलिए हमारे ऋषियों ने जो कहा है उस पर ध्यान दिया जाए कि भोजन करते समय वातावरण शुद्ध रहे। हर कहीं बैठकर भोजन न किया जाए। हमारे संतों ने थकावट दूर करने के उपाय भी शास्त्र में बताए हैं। शास्त्र के सिद्धांत हमें अनुभूति में उतारना चाहिए। इसका एक बड़ा मनोवैज्ञानिक कारण भी है। संतुलित भोजन आपको थकान से बचाएगा। यह भी ध्यान रखें कि न अधिक आहार लें और न कम आहार लें। गीता में कहा है कि बहुत तपस्या वाला व्यक्ति तथा बहुत कम खाने वाला व्यक्ति भी क्रोध बहुत करता है। यदि अधिक जागता है या अधिक सोता है, वह भी ठीक नहीं। अति से किया हुआ योग दु:ख देता है। इसलिए जीवन में आहार शुद्ध एवं संतुलित करें। जब गृहस्थी में आहार शुद्ध होगा तो विचार शुद्ध होंगे, व्यवहार शुद्ध होगा और जब ये दोनों शुद्ध होंगे, तब प्रेम टिकेगा और प्रेम टिकेगा तो एक-दूसरे पर विश्वास टिकेगा और जब विश्वास टिकता है तो गृहस्थी स्वर्ग हो जाती है।

धूमधाम से निकलती है भगवान जगन्नाथ की सवारी

आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को ओडिशा के पुरी नामक स्थान और गुजरात के द्वारका पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा बड़ी धूमधाम से निकाली जाती है। इस उत्सव के दौरान श्रद्धालुओं का भक्ति भाव देखते ही बनता है क्योंकि जिस रथ पर भगवान सवारी करते हैं उसे घोड़े या अन्य जानवर नहीं बल्कि श्रद्धालुगण ही खींच रहे होते हैं। पुरी में श्री जगदीश भगवान को सपरिवार विशाल रथ पर आरुढ़ कराकर भ्रमण करवाया जाता है फिर वापस लौटने पर यथास्थान स्थापित किया जाता है। यह उत्सव अद्वितीय होता है। इस अवसर पर देश विदेश से लाखों श्रद्धालु यहां एकत्र होते हैं।

भगवद भक्त इस दिन व्रत रखते हैं और उत्सव मनाते हैं। पुरी में जिस रथ पर भगवान की सवारी चलती है वह विशाल एवं अद्वितीय है। वह 45 फुट ऊंचा, 35 फुट लंबा तथा इतना ही चौड़ाई वाला होता है। इसमें सात फुट व्यास के 16 पहिये होते हैं। इसी तरह बालभद्र जी का रथ 44 फुट ऊंचा, 12 पहियों वाला तथा सुभद्रा जी का रथ 43 फुट ऊंचा होता है। इनके रथ में भी 12 पहिये होते हैं। प्रतिवर्ष नए रथों का निर्माण किया जाता है। भगवान मंदिर के सिंहद्वार पर बैठकर जनकपुरी की ओर रथयात्रा करते हैं जहां उनकी भेंट श्री लक्ष्मीजी से होती है। इसके बाद भगवान पुनः श्री जगन्नाथ पुरी लौटकर आसनरुढ़ हो जाते हैं।

दस दिवसीय यह रथयात्रा भारत में मनाए जाने वाले धार्मिक उत्सवों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार जगन्नाथ की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के बराबर माना जाता है। यात्रा की तैयारी अक्षय तृतीया के दिन श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा के रथों के निर्माण के साथ ही शुरू हो जाती है। जगन्नाथ जी का रथ गरुड़ध्वज या कपिलध्वज कहलाता है। रथ पर जो ध्वज है, उसे त्रैलोक्यमोहिनी या 'नंदीघोष' रथ कहते हैं। बलराम जी का रथ तलध्वज के नाम से पहचाना जाता है। रथ के ध्वज को उनानी कहते हैं। जिस रस्सी से रथ खींचा जाता है वह वासुकी कहलाता है। सुभद्रा का रथ पद्मध्वज कहलाता है। रथ ध्वज नदंबिक कहलाता है। इसे खींचने वाली रस्सी को स्वर्णचूडा कहते हैं।

रथयात्रा आरंभ होने से पहले पुराने राजाओं के वंशज पारंपरिक ढंग से सोने के हत्थे वाली झाड़ू से ठाकुर जी के प्रस्थान मार्ग को साफ करते हैं। इसके बाद मंत्रोच्चार एवं जयघोष के साथ रथयात्रा शुरू होती है। सर्वप्रथम बलभद्र का रथ तालध्वज प्रस्थान करता है। थोड़ी देर बाद सुभद्रा की यात्रा शुरू होती है। अंत में लोग जगन्नाथ जी के रथ को बड़े ही श्रद्धापूर्वक खींचते हैं। लोग मानते हैं कि रथयात्रा में सहयोग से मोक्ष मिलता है, अत- सभी श्रद्धालु कुछ पल के लिए रथ खींचने को आतुर रहते हैं। जगन्नाथ जी की यह रथयात्रा गुंडीचा मंदिर पहुंचकर संपन्न होती है। यह मंदिर वहीं पर स्थित है जहां विश्वकर्मा जी ने तीनों देव प्रतिमाओं का निर्माण किया था। यह भगवान की मौसी का घर भी माना जाता है। यहां भगवान एक सप्ताह प्रवास करते हैं और इस दौरान यहीं पर उनकी पूजा की जाती है। आषाढ़ शुक्ल दशमी को जगन्नाथ जी की वापसी यात्रा शुरू होती है। शाम तक रथ जगन्नाथ मंदिर पहुंच जाते हैं लेकिन प्रतिमाओं को अगले दिन ही मंत्रोच्चार के साथ मंदिर के गर्भगृह में फिर से स्थापित किया जाता है।

परिष्कार करता है परिवर्तन

परिवर्तन जड़ और चेतन हर तत्व का स्वभाव है। यह प्रियता का भी प्रतीक है। मनुष्य सदा ही एक वातावरण में रहे, उसे नया स्पर्श और अनाघात गंध न मिले तो उसे अपने जीवन में नीरसता की अनुभूति होने लगती है। एक ही धान्य से कितने प्रकार के खाद्य पदार्थ बनाए जाते हैं, क्यों? पेट भरने के लिए तो एक ही प्रकार का पदार्थ पर्याप्त होता है। उससे पेट भरता भी है पर मन नहीं। इसलिए वह गृहिणी कुशल कहलाती है, जो सुरुचिपूर्ण भोजन तैयार करने के साथ उसमें विविधता रखती है। यही बात पहनावों के बारे में है। परिवर्तन रुचि का परिष्कार करता है। अतः वह सबके लिए मोहक प्रतीत होता है।

बाह्य परिवर्तन जब इतना मोहक होता है, तब भीतरी परिवर्तन की मोहकता तो असंदिग्ध है। जो व्यक्ति अपने भीतर बदलाव शुरू कर लेता है और उसका अनुभव कर लेता है, वह फिर नहीं बदलने की बात में विश्वास ही नहीं करता। परिवर्तन की अपरिहार्यता प्रमाणित होने के बाद प्रश्न यह होता है कि बदलने का क्रम क्या हो? क्रम का होना जरूरी भी है अन्यथा गलत परिवर्तन से व्यक्ति अपने जीवन की गुणवत्ता और रसमयता को खो भी सकता है। परिवर्तन की पृष्ठभूमि में प्रेक्षा की उपस्थिति आवश्यक है। यह मेरा गहरा अनुभव है।

आत्मा से आत्मा की प्रेक्षा के संदर्भ में एक प्रश्न यह आता है कि दृष्टा भी आत्मा है और दृश्य भी आत्मा। क्या आत्मा खंडित है? क्या एक ही शरीर में अनेक आत्माएं हैं? प्रश्न बिल्कुल सही है। इनका उत्तर सापेक्ष दृष्टिकोण से ही मिल सकता है। आत्मा अखंड है। यह बात जितनी सही है, उतनी यह बात कि आत्मा खंडों में विभक्त है।

जैन दर्शनानुसार आत्मा अनेक हैं। यह आठ हैं। द्रव्य, कषाय, योग, उपयोग, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और वीर्य। इनमें सबसे पहले योग आत्मा को देखना है। योग आत्मा का अर्थ है-शरीर में होने वाले स्पंदन। शरीर में हर क्षण कितने प्रकम्पन हो रहे हैं।

यह अनुभूति साधारण स्थिति में नहीं होती। स्थिर होने का प्रयास होता है, स्पंदन उभर आते हैं। इनका उत्स है योग आत्मा, योग मन, वाणी और शरीर की चंचलता है, पर इसकी सर्जक है कषाय आत्मा। कषाय की प्रबलता कम हो तो योग की चंचलता भी क्षीण होने लगती है। इससे मुक्ति के लिए वीर्य आत्मा का सहारा लेना जरूरी है। इसलिए अपनी वृत्तियों को देखना, विकृतियों को देखना और उन्हें बदलने का प्रयत्न करना, अपने जीवन में नयापन लाना है।

क्या होती है महादशा-अन्तर्दशा?

भारतीय ज्योतिष के अनुसार ग्रह 9 माने गए हैं और इन 9 ग्रहों को 12 राशियों में बांटा गया है। सूर्य और चन्द्र के पास एक-एक राशि का स्वामित्व है, अन्य ग्रहों के पास दो- दो राशियों का स्वामित्व है। विंशोत्तरी गणना के अनुसार ज्योतिष में आदमी की कुल उम्र 120 वर्ष की मानी गई है और इन 120 वर्षों में आदमी के जीवन में सभी ग्रहों की महादशा पूर्ण हो जाती है। महादशा शब्द का अर्थ है वह विशेष समय, जिसमें कोई ग्रह अपनी प्रबलतम अवस्था में होता है और कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार शुभ-अशुभ फल देता है। ग्रहों की महादशा का समय निम्नानुसार है।

सूर्य- 6 वर्ष, चन्द्र-10 वर्ष, मंगल- 7 वर्ष, राहू- 18 वर्ष, गुरु- 16 वर्ष, शनि- 19 वर्ष, बुध- 17वर्ष, केतु- 7 वर्ष, शुक्र- 20 वर्ष।

इन वर्षों में मुख्य ग्रहों की महादशा में अन्य ग्रहों को भी भ्रमण का समय दिया जाता है, जिसे अन्तर्दशा कहा जाता है। इस समय में मुख्य ग्रह के साथ अन्तर्दशा स्वामी के भी प्रभाव-फल का अनुभव होता है। जिस ग्रह की महादशा होगी, उसमें उसी ग्रह की अन्तर्दशा पहले आएगी, फिर ऊपर दिए गए क्रम से अन्य ग्रह भ्रमण करेंगे।

ग्रहों की अन्तर्दशा का समय एफेमेरिज से निकाला जा सकता है। अधिक सूक्ष्म गणना के लिए अन्तर्दशा में उन्ही ग्रहों की प्रत्यंतर दशा भी निकाली जाती है, जो इसी क्रम से चलती है। इससे अच्छी-बुरी घटनाओं के ठीक समय का आकलन किया जा सकता है।